हम्मीर महाकाव्य

(सरल राजस्थानी भाषा में)

ताऊ शेखावाटी

प्रकाशक :

गीता प्रकाशन

32, जवाहर नगर, गुलाबबाड़ी
सवाईमाधोपुर–322022 (राज.)

हम्मीर महाकाव्य

मूल्य : 35.00

प्रथम संस्करण 1986

प्रकाशक : गीता प्रकाशन
32, जवाहर नगर, गुलाबबाडी
सवाईमाधोपुर-322022

मुद्रक : न्यू गर्ग प्रिन्टिंग प्रेस
गोपालजी का रास्ता, काशीनाथजी की गली, जयपुर-3

स्वर्गीय पिताश्री
पं. श्री मन्नालालजी गाँगिड़
के
चरणों में सादर समर्पित



CITY PALACE JAIPUR
31–12–1985

आमुख

भारतीय इतिहास मे चौहान राव हम्मीर अपने क्षत्रियोचित गुणो व वीरता के कारण अमर हो गया है। राजस्थान के किले रणथम्भोर के अधिपति राव हम्मीर को मुगल महिमाशाह को शरण देने के कारण तत्कालीन दिल्लीपति अलाउद्दीन खिलजी का कोपभाजन बनना पडा, उसने अपना सर्वस्व दाव पर लगा दिया, पर शरणागत को देना स्वीकार नही किया।

13 वी शती की इस अविस्मरणीय घटना को कई लेखको, कवियो व चित्रकारो ने अपनी-अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से जीवन्त किया जिनमे नयचन्द्र सूरि का हम्मीर महाकाव्य [1383 ई०], जोधराज का हम्मीर रासो व हम्मीर हठ व्यास भाडा का हम्मीरायण [1481 ई०] अमृत कलश का हम्मीर प्रबध [1626 ई०] उल्लेखनीय है। मध्यकालीन गीत एव कवित्तकारो ने भी हम्मीर को अपनी रचना का नायक

बनाया। राव हम्मीर की वीरगाथा केवल राजस्थान तक ही सीमित न रही, सुदूर बिहार में मैथिल कवि विद्यापति ने अपनी रचनाओं में राव की चर्चा की है, तो उत्तरी भारत [हिमाचल प्रदेश] के मंडी नामक स्थान पर चित्रकार सजनू ने 19वीं शती के आरंभ में हम्मीर हठ की एक वृहत् चित्रावली तैयार की।

उसी परम्परा में आधुनिक कवि श्री ताऊ शेखावाटी ने, जो स्वयं हम्मीर के दुर्ग रणथभोर के निकट सवाई माधोपुर के निवासी है, यह रचना राजस्थानी भाषा मे की है। इस अमर गाथा को जन-जन तक पहुंचाने का यह सफल प्रयास है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि राजस्थान के निवासी इसका आनंद उठाएंगे।

भवानी सिंह

सवाई भवानी सिंह ऑफ जयपुर
एम० वी० सी०



सेठ श्री भागीरथ जी शर्मा

(1, न्यू पलासिया इन्दौर)

द्वारा

अपनी मातृ-भूमि सीकर जिले

की

शिक्षण संस्थाओं के लिये प्रदत्त

आत्म निवेदन !

"त्रिया तेल हम्मीर हठ, चढै न दूजी बार "
राजस्थान मे ही नही अपितु सम्पूर्ण भारत मे असंख्य जन पारस्परिक वार्तालाप मे इस लोकोक्ति का उपयोग बडे गर्व के साथ करते है। बाल्यकाल में ही उक्त लोकोक्ति सुनते-सुनते इस तरह कठस्थ हो गई मानो यह किसी कविता या लोकप्रिय गायन की मधुर पक्ति हो।

—यद्यपि, मुझे उक्त लोकोक्ति के तात्पर्य के सम्बन्ध मे सर्वथा अनभिज्ञता थी, तथापि न जाने क्यो मेरे अन्तर्मन को इससे आत्मीयता सी हो गई थी। इस सदर्भ मे एक सस्मरण अनायास ही स्मरण हो उठता है कि जब मैं पाचवी कक्षा मे अध्ययनरत था तब मेरे पूज्य पिताजी ने रणथम्भोर के राजा हम्मीर की कहानी मुझे सुनाते हुए यह बताया था कि उन्होने किस प्रकार खिलजी वश के सर्वाधिक कूटनीतिज्ञ बादशाह अलाउद्दीन खिलजी के किसी मोहम्मदस्या नामक सेनानायक को शरण दी थी कि जिसके प्रतिफल स्वरूप उन्हे अलाउद्दीन खिलजी का कोपभाजन बनना पडा।

रामचरित मानस मे उल्लिखित इन पक्तियो को कि—

"शरणागत को जे तजहिं, निज अनहित अनुमानि।
ते नर पामर पापमय, तिन्हिं बिलोकति हानि॥"

को साकार करते हुए बादशाह खिलजी के बारम्बार आग्रह करने पर भी अपनी आन पर मर मिटने वाले राजा हम्मीर ने शरणागत को वापिस लौटाना स्वीकार नहीं किया और अपने इसी हठ के परिणामस्वरूप उन्होने दिल्ली के बादशाह से हुए दीर्घकालीन भीषण युद्ध मे अपने प्राणो का बलिदान कर दिया। तभी से "हम्मीर हठ" की इस लोकोक्ति का भारतीय इतिहास मे प्रादुर्भाव हुआ।

—इतिहास साक्षी है कि युद्ध सदैव सम्पत्ति, भूमि एव नारी को लेकर ही हुए हैं किन्तु इसके विपरीत वीर हम्मीर ने इतिहास के इस अध्याय मे शरणागत को अपने दिये हुए वचन के लिये मर मिटने का एक पृष्ठ और जोड दिया। अपने वचन को निभाने तथा शरणागत की रक्षार्थ मर मिटने का ऐसा सर्वोत्कृष्ट उदाहरण इतिहास के किसी भी पन्ने पर हम्मीर के अतिरिक्त किसी अन्य का मिलना दुर्लभ है। ऐसे वचनशिरोमणि एव इतिहासप्रसिद्ध राव हम्मीर के जीवन काल मे घटित हम्मीर हठ के प्रकरण को देश की युवा पीढी तक पहुँचाने एव उनमे पुरुषार्थ की भावना जागृत करने के उद्देश्य से मैंने इस "हम्मीर महाकाव्य" की रचना की है।

—देश की वर्तमान युवा पीढी जिसको कि दिशाहीन की संज्ञा भी दे दी जाय तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी, उसे आज स्वतन्त्रता के महत्व, आदर्श शिक्षा एव सगठित युवा शक्ति का राष्ट्रहित मे उपयोग आदि विषयो को समझने की नितान्त आवश्यकता है और यह सब वीर हम्मीर जैसे महापुरुषो के आदर्शमय अनुकरणीय जीवन से ही मिलना सम्भव है। ऐसी मेरी दृढ मान्यता है।

—इस महाकाव्य को मैंने यथासाध्य विशुद्ध राजस्थानी भाषा मे लिखने का उपक्रम किया है कि जिससे अपनी 'मातृभाषा' के प्रति युवको का रुझान हो तथा राजस्थानी भाषा के विकास मे भी सहायक सिद्ध हो सके। जहाँ तक बन पडा है इस महाकाव्य की रचना मे सरलतम राजस्थानी भाषा का ही प्रयोग किया गया है। मुझे यह कहते हुए गर्व है कि राजस्थानी भाषा एक विशाल सागर की भाति है जिसमे कई शब्द अन्य भाषाओ के होते हुए भी इस सागर मे इस तरह लुप्त हो गये हैं कि मानो उनका वर्चस्व ही समाप्त हो गया हो और ऐसा लगता है कि वे राजस्थानी भाषा मे पूर्णरूपेण समा गये है। इसीलिये ऐसे शब्दों का मैंने कई स्थानो पर यथावत् प्रयोग किया है। मुझे आशा है कि राजस्थानी भाषा के प्रेमी जन निश्चय ही इस महाकाव्य को अपनायेंगे।

इस महाकाव्य की रचना मे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से मिले सक्रिय सहयोग के लिये मैं सभी विद्वान, कृपालु सहयोगियो के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। ऐसे सहयोगी बन्धु श्री कन्हैयालाल जी सेठिया कलकत्ता, श्री विश्वनाथ जी "विमलेश" झुंझुनूं, श्री गोपाल नारायण जी बोहरा पोथीखाना, सिटी पैलेस, जयपुर श्री कन्हैयालाल जी जाँगिड सवाईमाधोपुर का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्होने अपना अमुल्य समय देकर इस महाकाव्य के सृजन मे सहयोग दिया है।

इस महाकाव्य का 'आमुख' लिख कर महाराजा सवाई भवानी सिंह जयपुर ने मुझ पर जो महती कृपा की है उसके लिये मैं उनका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

जिस स्नेह और अपनत्व से पुस्तक को छापा है उसके लिये मै श्री रामदास जी व श्री मोहनलाल जी गर्ग जयपुर का कृतज्ञ हूँ।

अत मे, मैं उन सभी विद्वान लेखको, कवियो के प्रति भी अपनी श्रद्धा व्यक्त करता हूँ, जिनकी पुस्तको, रचनाओ से मैंने इस महाकाव्य को लिखने मे सहायता ली है।

19 सितम्बर, 1986 ताऊ शेखावाटी

अनुक्रमणिका



प्रस्तावना

खूंणो-खूंणो कह रयो कहाणी
वीर, धीर, गम्भीरां री ।
भारत रो राजस्थान रयो है
अमर-भोम रणधीरां री ।

ईं धरती रो बेटो प्रताप
अकबर नैं धूळ चटाई ही ।
मेवाड़-धरा री आजादी ईं
आपणी ज्यान गँवाई ही ।

जद ज्यांन हथैळी पर लेकी
अै वीर आण पर अडज्याता।
तो अेक बार तो आण रै लियां
महाकाळ स्यूं भिडज्याता।

अै अंगारां स्यूं खेलणियां
जलणै री चित्या कद करता।
अै कफन बांध की सोवणियां
मरणै रै डर स्यूं के डरता।

खुद मौत डर्‌या करती हरदम
आं महाकाळ रै दूतां स्यूं।
ई धरती मां रा वीर लाडला
बेटा सिंघ सपूतां स्यूं।

अै आजादी रा परवानां
आजादी रै ताणी मरग्या।
रजपूती आंण निभा की पण
पुरखां रो नाम अमर करग्या।

जनम्यो है वो तो मरसी ही
दुनियां में जिन्दो कुण रैसी ?
पण मात-भोम रै लिये मरणियां-
रो तो नाम अमर रैसी।

इतिहास गवाही दे र्‌यो है
आ धरती खाण है वीरां री।
आंण-बांण रै लिये मरणियां
राजपूत रणधीरां री।

वै राजपूत ज्यांरी गरदन
कटणं कटगी पण झुकी नही।
कद्दै भी दुसमण रै आगै
रजपूती पगडी झुकी नही।

आं रजपूतां मांही हम्मीर
राजा होयो ग्रेक नामी है।
जो आज सुणावूं हूं थानै
बी री ही अमर कहाणी है।

आं पूरै रजपूतां मांही
वचणां तांणी मरज्यावणियो।
नहीं होयो कोई भी सूरवीर
ग्रैयां को वचन-निभावणियो।

जो भारत री सस्कृति, धरम
कुळ री मरजादा रै तांणी।
खुद ज्यान लुटा बैठ्यो अपणी
सरणागत री रच्छ्या नांणी।

यी राजस्थानी गौरव नै
ग्रावो सारा मिल नमण करां।
गाथा ईं धरती रै बेटै
हम्मीर-हठी री श्रवण करां।

है आज जरूरत घणी देस रै
ज्वानां नै वनलावण री।
ईं वीर धरा रै वटां नै
वीरां री कथा सुणावण री।

जद ज्यान हथेळी पर लेकी
श्रै वीर श्राण पर ग्रडज्याता।
तो श्रेक बार तो श्राण रै लियां
महाकाळ स्यूँ भिडज्याता।

श्रै श्रगारां स्यूं खेलणियां
जलणै री चिंत्या कद करता।
श्रै कफन बांध की सोवणियां
मरणै रै डर स्यू के डरता।

खुद मौत डर्‌या करती हरदम
श्रां महाकाळ रै दूतां स्यूं।
ई धरती मां रा वीर लाडला
बेटा सिंघ सपूतां स्यू।

बै श्राजादी रा परवाना
श्राजादी रै ताणी मरग्या।
रजपूती श्रांण निभा की पण
पुरखां रो नाम श्रमर करग्या।

जनम्यो है वो तो मरसी ही
दुनियां मे जिन्दो कुण रैसी ?
पण मात-भोम रै लिये मरणियां-
रो तो नाम श्रमर रैसी-।

इतिहास गवाही देर्‌यो है
श्रा धरती खाण है वीरा री।
श्रांण-वांण रै लिये मरणियां
राजपूत रणधीरां री।

वै राजपूत ज्यांरी गरदन
कटणै कटगी पण झुकी नहीं।
कद्दै भी दुसमण रै आगै
रजपूती पगड़ी ढुकी नहीं।

आँ रजपूतां माँहीं हम्मीर
राजा होयो अेक नामीं है।
जो आज सुणावूँ हूँ थानें
वी री ही अमर कहाणी है।

आँ पूरे रजपूतां माँहीं
बचणां तांणी मरज्यावणियो।
नहीं होयो कोई भी सूरवीर
ग्रैयां को वचन-निभावणियो।

जो भारत री संस्कृति, धरम
कुळ री मरजादा रै तांणीं।
खुद ज्यान लुंटा बैठ्यो अपणी
सरणागत री रच्छया तांणी।

वी राजस्थानी गौरव नै
आवो सारा मिल नमण करां।
गाथा इं धरनी रै बेटै
हम्मीर-हठी री श्रवण करां।

है आज जरूरत घणी देस रैं
ज्वानां नै बतलावण री।
इं वीर धरा रै बेटां नैं
वीरां री कथा सुणावण री।

है आज जरूरत अण रै मां
सोयेडो जोस जगावण री।
अणमांय छिप्योडी ताकत रो
अण नै अ दाज करावण री।

आजादी री के कीमत है
आनै फिर स्यूं समझावणरी।
है आज जरूरत देस-प्रेम रो
ओजूं पाठ पढावण री।

है आज जरूरत ज्वानां नै
फिर स्यूं चेतो करवावणरी।
अर अण रै मन मे देस-प्रेम
री उज्जवळ जोत जळावण री।

है आज जरूरत दुनियां मे
भारत रो मान बढावण री।
हर छेत्र मांय इं भारत नै
चोटी उपर पूंचावण री।

है माग समै री देश भक्ति-
रा, गाणा गूंजै घर घर मे।
महापुरुसां रा जीवन-चरित्र
सुणवाया जावै हर घर मे।

इं भारत रै टाबरियां रा
हो वीरां का सा सस्कार।
यूं देस-प्रेम स्यूं भरी अेक
भावी पीढी होवै तैयार।

ईं भावी पीढ़ी रै खूं में
जी दिन उबाळ आज्यावगो।
वी दिन भारत रो हर बाळक
हम्मीर-हठी बण ज्यावगो।

किणरी हिम्मत है फेर कोई
दुस्मण हमळो कर पावैगो।
किणरी माँ अजवायण खाई
जो अण स्यूँ आ टकरावैगो।

उद्दे स यो ही लेकी मन में
लिखणै बैठ्यो हूँ आज काव्य।
इतिहास-पुरुष हम्मीर राव री
किरती-कथा हम्मीर-काव्य।

समुन्दर सो फैल्योड़ो यो
हम्मीर–राव जीवन चरित।
मैं मन्द-बुद्धी के लिखण सकूं
वी वचन-सिरोमणी रो कवित्त।

पण हंस-वाहणी, वीणावादणि
मात सुरसती नैं ध्याकी।
ईं-सत किरतण नैं सुरु कर-
र्यो हूँ मन रै माँ हरसाकी

कवि-धरम निभावण रै ताणी
छोटो सो कर र्यो हूँ प्रयास।
गुरुजण, परिजण, जण-जण सब स्यूँ
आसीस मिलण री लियाँ आस।

ओ ! विघन निवारण, काज सँवारण
रणत भँवर रा बिन्दायक।
सबस्यूँ पैल्यां सुमरूं थानैं
थे दास जाण बणज्यो सायक।

जिणरै प्रताप स्यूँ सूरज चमकै
माँ धरती अन उपजावै।
जिणरी माया रो भेद कदै भी
रिसि, मुनि, संत नही पावै।

वाँ महादेव ब्रह्मा विस्णु
तीन्यां नै सीस झुकाकर की।
गुरु चरण वदनां कररयो हूँ
हिरदै में ध्यान लगाकर की।

श्रद्धा स्यूँ माथै सतां री
पगल्यां री धूळ लगारयो हूँ।
मैं मीणमेख काढ़णियां नै
भी नमको सीस नवारयो हूँ।

जिणरो रिण मात जनम मे भी
कोई नही चुका सक्यो जग में।
वाँ मात-पिता रो आसिरवाद
वस्यो रै मेरी रग-रग मे।

मन मन्दिरिये में बस ज्यावै
सै देवी–देवता कृपा करै।
सुरसती वसी रै कलम मांय
तो "ताऊ" मारो काज सरै।

हम्मीर बंस

हो प्रिथीराज चौहाण बन मे
नांमी राजा दिल्ली रो।
समराट आखरी वोही होयो
है हिन्दवां में दिल्ली रो।

वी रै बटै गोविन्द देव-
रै अंस पोतो हो वाग्भट्ट।
अर जीरै बेटै जैत्रसिंघ
घर जनम्यो हो हम्मीर हठ्ठ।

ओ ! विघन निवारण, काज सँवारण
रणत भँवर रा विन्दायक।
सबस्यूँ पैल्यां सुमरूं थानै
थे दास जाण बणज्यो सायक।

जिणरै प्रताप स्यूँ सूरज चमकै
मों धरती अन उपजावै।
जिणरी माया रो भेद कदै भी
रिसि, मुनि, सत नही पावै।

वां महादेव ब्रह्मा विस्णु
तीन्यां नै सीस झुकाकर की।
गुरू चरण वदनां कर्र्यो हू
हिरदै मे ध्यान लगाकर की।

श्रद्धा स्यूँ माथै सतां री
पगल्यां री धूळ लगार्यो हूँ।
मैं मीणमेख काडणियां नै
भी नमकी सीस नवार्यो हूँ।

जिणरो रिण सात जनम मे भी
कोई नही चुका सक्यो जग मे।
वां मात-पिता रो आसिरवाद
बस्यो रै मेरी रग-रग मे।

मन मन्दिरिये मे बस ज्यावै
सै देवी-देवता कृपा करै।
सुरसती बसी रै कलम मांय
तो "ताऊ" मारो काज सरै।

हम्मीर वंस

हो प्रिथीराज चोहाण वस मे
नामी राजा दिल्ली रो।
समराट आखरी वोही होयो
हे हिन्दर्वा मे दिल्ली रो।

वी रै बटै गोविन्द देव-
रै अर पोतो हो वाग्भट्ट।
अर जीरै बटै जैत्रसिंघ
घर जनम्यो हो हम्मीर हठ्ठ।

गोविन्द देव स्यूं ले हम्मीर
तांणी चौहांण घरांणां रो।
अजमेर और गढ रणत-भँवर
पर रयो राज चौहांणां रो।

हो जैत्रसिंघ री सैस्यूं ज्यादा
प्यारी रांणी हीरां दे ।
"हम्मीर-काव्य" रैं नायक री
मां हो पटरांणी हीरां दे।

बी रैं जद जनम्यो हो हम्मीर
जद जैत्रसिंघ रो राजपाट ।
च्यारू-मेर फैलर्‌यो हो
हा रणत-भवर मे ठाठ बाट।

वां दिनां चोहांणां री रजपूतां
में तूंती बाज्या करती ।
गढ रणत-भवर रैं मांय-
जैत्रसिंघ री घाई गाज्या करती।

तिथ, पुल, घडी मिली सारी
सुभ लगन मांय सजोग बण्यो ।
रांणी हीरा देवी हम्मीर
चौहांण वंस कुळदीप जण्यो।

रांणी रैं कुंवर होयो सुण की
महलां मे खुसियां मचण लगी।
राजा नैं देण वधाई रणवासैं-
री, दास्यां भगण लगी ।

चदण, केसर, वस्तूरी, लाल-
गुलाल उडण लागी गढ मे ।
सोनै रा थाल वजण लाग्या
आनन्द भयो भारी गढ मे ।

घड घडाट कर गूंजी तोपाँ
नोबत, नगारा वजण लग्या ।
वांदरवालाँ स्यूं गळी-गळी
गढ रा दरवाजा सजण लग्या ।

पुत्र-जनम पर जैत्रसिंघ
खुद धरम पुन्न कीन्यो भारी ।
बामणाँ, दासियाँ, भाट्याँ नै
अन-धन रो दान दियो भारी ।

गरीबाँ माँय् घणा कपडा
लत्ता गैणा बटवादीन्या ।
बटै रै उपर वार-वार
मोत्याँ रा थाळ लुंटा दीन्या ।

जलवा-पूजण पर वामणियाँ-
रै गीताँ मे रस आण लग्यो ।
नाच-गाण होयो श्रैयाँ रो
इन्दर-लोक सरमाण लग्यो ।

सुभ घडी जाण की महलाँ स्यूं
राजा सदेसो भिजवायो ।
तो नाम-करण करणै वाळक रो
कुळ रो राजगुरू आयो ।

जद नाम-करण करणै तांणी
पतडै नै राजगुरू खोल्यो ।
तो देख भाग ई वाळक रो
राजा स्यूं वो श्रैंय्यां वोल्यो ।

राजा सपूत रा पगल्या तो
पालणियें मे ही दिखज्यावै ।
जनम्यो जी घडी मे यो वाळक
वी मे या साफ नजर ग्रावै ।

होवैंगो वीर लडाकू यो
वालक चौहाण घराणै गो ।
हठ रो पक्को, वात रो धणी
रजपूतां मांय ठिकाणै रो ।

सुण जेत्रसिंघ तेरो यो बेटो
कुल मे नाम कमावैगो ।
सारी दुनियां मांही श्रपणो
यो नाम श्रमर कर ज्यावैगो ।

यूं कह की वालक रो हम्मीर दे
नाम निकाल्यो राजगुरू ।
फिर दे श्रसीस ले विदा जेत्र-
सिंघ स्यूं चल दीन्यो राजगुरू ।

गुरु वचणा नै सुण राजा रै
मन मांय उमड्यो घणो प्यार ।
वटै नै गोदी मे उठाय
मूं चूंमण लाग्यो वार-वार ।

ऊँठी नैं राणी हीरां दे
निरखै ही मॉय झरोखै स्यूं ।
राजा नै लियाँ कुँवर देख्यो
वा गोदी मॉय झरोखै स्यूं ।

तो ममता फूट पड़ी माँ की
हिवड़ै में प्यार उबाळ भर्यो ।
राणी री छात्यां मे स्यूं वो
वण धार दूध री निकळ पड्यो ।

ज्यूं गाय पावस्यावै अपणै
वाछड़िये रो मुख देख-देख ।
वाही हालत होरी ही राणी
की बेटै नैं देख-देख ।

जद ज्यादा सैण नाँ करण सकी
तो बा आखिर में जाकर की ।
दासी नैं भेज बुलाय कँवर नैं
छाती स्यूं चिपचाकर की ।

झट दूध चुँघाण लगी अपणो
तो ठंड कालजै पडण लगी ।
गोदी में हिला-हिला कर की
वा लाड कँवर रो करण लगी ।

कद्दे गुदगुदी करै छड़ै
कद्दे हिलरावै पुचकारै ।
हो गई बावळी सी राणी
कद्दे भींचै थपकी मारै ।

"ताऊ" या वात कदे कोई
सांची ही कहग्यो हूं देखो ।
टावर रै सागै स्याणो भी
टावर ही होज्यावै देखो ।

मायड री ममता रो वखाण
तो देवता भी नही करण सकै।
तो माणस होकी फेर कवि
कविता मे कैयां बरण सकै ।



राजतिलक, राज्य

यूं समो बीततो गयो श्रौर
हम्मीर बडो होवण लाग्यो ।
धनुस-बाण, तलवार चलाणै
मे होस्यार होवण लाग्यो ।

बालक पण बीत्यां गयो जवानी
चैरे पर छलकण लागी ।
ताकत स्यूं भरे हुये तन री
बोटी-बोटी नाचण लागी ।

सूरज सो तेजस्वी चैरो
पत्थर जैसी करडी छाती ।
मतवाळो हाथी सो चलतो
तो दस्यूं दिसावां थरराती ।

धीरै धीरै हुंकार होवो
गै गजराज गमकता गाजो।
सो गज-पाट में हाथ बैठावन
अंकुस रै मो मारो।

सिर काट-काट रै गजवीं
नै हाथ थार गो गज-पाट।
धैंगावण लागो दुसमन रा
रण-भूमी मे सिर पाट-पाट।

पंडी को उपर अब्बर हो वो
ज मन मे मतो कर लेतो।
नाहर को पकड़ उखाड़ो भट।
दो टुकड़ा करको धर देतो।

हो मरतो निमालं दाव, गोर
रो आगो गाम्बी दार नहीं।
हो पगान मेरमी रो जाणो
मावण रो हो गुम्मार नहीं।

जद पकड़ हाथ मे झटकै स्यूं
ज गो तलवार चला देतो।
गो एक वार मे ही हाथी-
रै सिर नै काट गिरा देतो।

गुस्से में धाड़ मारतो तो
गढ़ री दीवार हिला देतो।
हो मरद गाजर गडे ऊंट-
नै मुक्को मार गिरा देतो।

यूँ पूरै रजवाडाँ माँही
वाताँ हम्मीर री होण लगी।
ब्या जोग उमर ही, ई ताँणी
रिस्तै री वाताँ होण लगी

कितणा ही राजा अपणी अपणी
कुवर्‌याँ रै रिस्तै ताँही
आवण लाग्या तो जेत्रसिंघ
खुस होकर की मन रै माँही।

सौवणी-सौवणी सात राज-
कुवर्‌याँ नै देख ठिकाणै री।
ब्यादी हम्मीर नै सात्यूँ ही
ही चोखै राज घराणैरी।

जद जेत्रसिंघ समझण लाग्यो
सै कानी स्यूँ हम्मीर राव।
हैं राजा ग्रण नै रै लायक
तो हिवडै मे भर घणो चाव।

बोल्यो हम्मीर नै सुणो कँवर!
अब मनै वुढापो आण लग्यो।
ई राज-पाट रै कामाँ स्यूँ
अब जी मेरो उकताण लग्यो।

तूँ सै वाताँ मे लायक है
स्याणो है, मैं या चार्‌यो हूँ।
तनै मेरै मन री सारी
साँची मनस्या बतार्‌यो हूँ।

ई रणत भँवर गढ री रक्षा
रो भार तनै सम्भळावरकी ।
मै इष्ट देव सवर री भगती
चम्बल तट पर जावर की ।

वरणो चावूं हूं सुण वेटा
यूं कंवी राजतिलक करकी।
हम्मीर राव रै माथै पर
अपणै कुळ री पगडी धरकी।

मै धरम-करम, नीती री
शिक्षा दे की अपणै वटै नै ।
जैत्रसिंघ चल दियो राज
सभळा की अपणै बटै नै ।

यूं सोळा दिसम्बर बारा-सो
इयसी मे रणत भँवर गढ की ।
गद्दी पर बैठ्यो हो हम्मीर
फिर दिग्ग विजय तांई नढकी।

मनस्यू पैल्याँ सेना ले की
वो नगर भीमरस रै राजा ।
अर्जुन देव नै हरा विजय रा
बजा दिया रण मे वाजा ।

मॉडलगढ नै जीत फेर वो
भोजराजप रमार वम-
रै राजा री धारा नगरी
नै रण रै मॉही करी ध्वस ।

फिर महाकाळ रा दरसण कर
उज्जैन स्यूं वढण लग्यो आगैं ।
जीत्यो चित्तौड और आबू
फिर अपणी सेना रैं सागैं ।

वो रिसभ देव नैं सीस झुका
की मदाग्नी मैं न्हांण कर्‌यो
आबू की देवी री पूजा कर
कुछेक दिन विसराम कर्‌यो ।

फिर अचल देव री पूजा कर
आबू नैं लूंट वढ्‌यो आगैं ।
अजमेर होवतो पूंच्यो पुसगर
अपणी सेना रैं सागैं ।

पुसगर मे न्हा ब्रह्माजी री
पूजा कर मन मे सुखपायो ।
यूं लूंट-मार करतो-करतो वो-
महा-राष्ट्र तक वढ आयो ।

खण्डवा, चम्पा नैं सर कर-
वरधण पुर मे लूंट मचा दीन्ही ।
यूं च्यारूं-मेर हम्मीर आपरी
रण मे धूम मचा दीन्ही ।

फिर विजय सिरी करतो करतो
गढ रणत-भवर पाछो आयो ।
तो राजगुरू रो मौन न्ह्यो
भारी कोटि-यज्ञ करवायो ।

ईं कोटि–यज्ञ रै माँ हम्मीर
गढ रो खज्जानो लुंटा दियो।
अर दाँन-वीरता में अपणो
दुनियाँ में डंको वजादियो।

फिर मोन-ब्रत कर दियो सुरू
बो अेक महीनें रैं ताँई।
सिव-भगती में होगयो लीन
बो मन री सांती रै ताँई।



पैलो–युद्ध

बीस जुलाई सन बारा सौ
छिण में रै मों दिल्ली रै।
सुलतान जलालूदीन री हत्या
करदी तख्ते दिल्ली रै-

ऊपर हत्यारो अलादीन-
खिलजी अधिराग जमा बैठ्यो।
यूं अेक कपटी, अत्याचारी
सुलतानें दिल्ली बण बैठ्यो।

धीरै-धीरै हम्मीर मौन-व्रत
री वातां पूंची दिल्ली ।
तो मोको चोखो देख मोचणं
लाग्यो सुलतानेनें दिल्ली ।

हम्मीर कदे भी सिव-पूजा
नें बीच मांय छोडै कोनी।
वो अेक महिनें पल्यां अपणो
मौन-वरत तोडै ोनी ।

गढ रणत-भवर जीतण तांई
जे अब हमलो बोल्यो जावै ।
तो मौन-बरत धारी हम्मीर
रण करणै कदे नही आवै ।

अल्लाह दियो है यो मौको ।
या सोच खुस होयो मन मांही।
झट,भारी सेनां भिजवादी
वो रणत-भंवर जीतण तांही।

सेनां बनास तक पूंची तो
रजपूतां नैं बेरो पटग्यो ।
झट धरमसिंघ ले भीमसिंघ-
नैं सेनां सामी आ डटग्यो ।

वी भगत प्रधान मंत्री हो गढ-
रणत भंवर रो धरमसिंघ ।
अर वीर लडाकू सेनां-नायक
हो हम्मीर रो भीमसिंघ ।

या दोन्यौं रो रण देख मुगल
सेनिक होग्या हक्का बक्का ।
रजपूत लड़्या तो खिलजी की
सेनाँ रा छुटा दिया छक्का ।

जद मुगला पर रजपूती सेना
रैं बाणाँ री लगी झडी ।
तो रण रैं माँ हथियार छोड
खिलजी री सेनाँ भाग पडी ।

यूँ साही सेनाँ नैं खदेड
की धरमसिंघ पाछो आग्यो ।
अर भीम सिंघ बी पीछैं हटतो
सेनाँ नै लूँटण लाग्यो ।

कर लूँट-मार भगती सेनाँ नै
खुस हो पाछो आण लग्यो ।
मस्ती मे भर मुगलाँ स्यूँ
खोसेडा बाजा बजवाण लग्यो ।

रण जीत्योडो वो भीमसिंघ
अठैं आताँ धोखो खाग्यो ।'
आखिर मे ठाकर ही तो हो
ठाकर ठुकराई पर आग्यो ।

रण-भूमी मे जमगी मै-फिल
पी की दारु सैं धुन होग्या ।
बाजैं री धुन पर नाच उठ्या
सैं राग-रागणी मे खोग्या ।

जद चाण-चुक्यां ही रण मांही
गुंजण लाग्या साही वाजा ।
तो मुगळ भागणो छोड झट
रण रै मांही पाछा आग्या ।

तो घिरग्यो रण मे भीमसिंघ
अर मरग्यो रण करतो-करतो।
"ताऊ" दारु पीयंडो हो वो
रण रै मांही के लडतो ।

फिर हार्योडी साही सेनाँ
दिल्ली नै पाछी हुयी भीर ।
जद मौन-व्रत पूरो होयो
तो बुला धरमसिंघ नै हम्मीर।

फटकारयो बोल्यो रै कायर
तूं भीमसिंघ नै बोल कियां ?
रण मांय अेकलो छोड्यायो
आयो रण स्यूं मूं मोड कियां ?

रै आस्तीन रा सांप ! बता
तूं भीमसिंघ नैं मरवाकी ।
मनै मूं कैयां दिखळायो ?
बुजदिल मेरै सामी आकी ?

रै दगावाज ! क्यो जिन्दो आयो
भीमसिंघ नै खोकी तूं ?
क्यूं पीठ दिखाई रण मे
बेटो राजपूत रो होकी तूं ?

यूं के प्रधान-पद लें वी स्यूं
झट भोजराज नें थमा दियो।
अर भीमसिंघ री जगां-
सेनापति रतीपाल नें बणा दियो।

पण भोजराज कोई चोखी
नही अर्थ-व्यवस्था करण सक्यो।
जितणो होणोचाये उतणो
वो धन भेळो नही करण सक्यो।

तो आखिर में हम्मीर राव
बीनें ईं पद स्यूं हटा दियो।
अर रणमल नें परधान-
मन्त्री पद रै उपर बिठा दियो।

यूं 'इज्जत बे-इज्जत होई
तो भोजराज दिल्ली जाकी।
अपणे भाई पीथसिंघ सग
मिलग्यो खिलजी स्यूं आकी।

तो कूटनीत खिलजी बी नें
राजी हो गळै लगाय लियो।
"जगरै" की दे जागीर झट
अपणी सेनां में मिला लियो।

या बात समझ र् यो हो खिलजी
लोवो लोवै नें काटेगो।
जागीर देणी ईं भोजराज नें
काम नही है घाटे को।

यो खार खायेडो राजपूत
मोकै पर देगो काम कदै ।
यो पट्यो-रयो तो मेरै ताणी
देज्यावगो ज्यान कदै ।

"ताऊ" खिलजी रा ये विचार
सोळाणा साँचा हा भाई ।
इतिहास गवा है दुनियाँ मे
घर का भदी लका ढाई ।



मौहम्मदस्या नैं सरण

खिलजी रो ही सरदार एक
हो नाम मोहम्मदस्या जी रो ।
वातां ही वातां मे होग्यो हो
खिलजी स्यूं झगडो वी रो ।

वैयां तो वो हो वफादार
सेनापति जाती रो पठाण।
विश्वास-पात्र हो खिलजी रो
हो सूरवीर बांको जवान ।

पण होणी नै कुण टाळ सकै ?
खिलजी नादानी कर बैठ्यो।
सुलतानी रै मद मे वी नै
फांसी री सजा सुणा बैठ्यो ।

पण कैयाँ-जैयाँ बो पठाण
दिल्ली स्यूं ज्यान बचा भाग्यो।
अर कई जगाँ के राजवाँ स्यूं
सरण माँगणं बो लाग्यो ।

पण सहनस्याह रै बागी नै
कोई भी मरण नाँ दे पायो ।
तो मोहम्मदस्याह पठाण भाग
राजा हम्मीर कन्नै आयो ।

बो जाणे हो गढ रणत-भँवर-
रो सासक है राजा हम्मीर ।
है देसभक्त, हठ रो पक्को
सरणागत रक्षक, सूर बीर ।

सरणागत-पाल क्रपाल अरे
राजा हम्मीर ! दुहाई है ।
ओ राजपुतानाँ कुळ दीपक
सुण ओ हम्मीर ! दुहाई है ।

यूं कह की गिरग्यो चरणा मे
जीवन की रक्षा रै ताँणी ।
रो-रो की माँगी भीख आपरा
प्राण बचावण रै ताँणी ।

सरणागत समझ हम्मीर हठी
झट हाथ पकड की खड् यो कियो
दे अभैदान मोहम्मदस्या नैं
जीवन-रक्षा रो वचन दियो ।

जद पतो बादस्या नैं चाल्यो
हम्मीर भरण मोहम्मदस्या नैं ।
दी है तो लिखकर की पाती
भेजी बी नैं समझावानैं ।

हम्मीर ! आग स्यूं मत खेलै
जीवन री जे चावै-है खैर ।
मेरै बंदी नैं देय सरण
मेरै स्यूं मतनां करै बैर ।

मेरै स्यूं टक्कर लेकी क्यूं
बे-मतलब मरणो चावै है ।
आवै जद मौत गादड़ै की
बो सहर भाग खुद आवै है ।

हठ मतनां पकड हम्मीर हठी
नहीं तो पाछै पछतावैगो ।
मेरी सेनां मकड़ी जाळो
तूं मांखी सो फँस ज्यावगो ।

क्यो जाण बूझ की रजपूतण-
नैं रांड बणाणी चावै है ?
क्यो मेरै बंदी रै तांणी
तूं अपणो ज्यान गंवावै है ?

मैं सहनस्याह हूँ दिल्ली रो
फिर भी तन्नें समझार्यो हूँ ।
या पत्री साखी है कि मैं
रण करणो कोनी चार्यो हूँ ।

राजा हम्मीर जद सुणी खबर
लेकी संदेश सहनस्याह को ।
गढ री डोढ्यां प' आयो है
दिल्ली स्यूं दूत बादस्या को ।

तो झट आदेश कर्यो जारी
जावो चौखो सतकार करो ।
मेहमांन दूत है इज्जत स्यूं
जल्दी हाजिर दरबार करो ।

झट हुकम बजायो गया दूत
आ झुक आदाब अर्ज कीन्हीं ।
फिर पत्री खिलजी री निकाल
राजा हम्मीर आगे कीन्हीं ।

खिलजी री चिठ्ठी रा आखर
गोळी सा लाग्या छाती मे ।
नस-नस मे आग लगा दीन्ही
समाचार लिख्योडा पाती मे

निकली चिंगारी आँख्यां स्यूं
गुस्से स्यूं चैरो लाल होयो ।
भौंवां तणगी, मुठ्ठी भिंचगी,
भुज फडकी, मुख विकराळ होयो ।

हम्मीर महाकाव्य

दहाड मार फिर नाहर सी
हम्मीर कयो गुस्सै मे भर ।
जा दूत सुणा दे खिलजी नै
दिल्ली जा की मेरो उत्तर ।

राखै जो ज्यान हथैळी पर
गीदड भभक्यां स्यूं डरै नही ।
ई राजपुतानै री माटी
या बात गवारा करै नही ।

या कदे न होवे कि हम्मीर
अपणै वचणां स्यूं टळ ज्यावै ।
रक्षा करस्यूं सरणागत री
जावै तो ज्यान चली जावै ।

जद दिया वचन, तो दिया वचन
दे की वचणां स्यूं के टळणो ।
वचनां स्यूं प्राण नही प्यारा
वचनां ताणी जीणो मरणो ।

जे मां को दूध पियो है तो
मत गाल वजा अर आगै वढ ।
ज असल वाप रो वेटो है
तो आ रण मे मेरै स्यूं लड ।

मेरा ये मुठ्ठी भर जवांन
तेरी सेनां स्यूं टकरासी ।
तो तेरी सेनां नैं खिलजी
छट्ठी रो दूध पिला ज्यासी ।

जो लिख भेज्यो तूं पाती मे
वो वदै नां उलटो होज्यावै।
सुण राजपूतणी रै वदळै
बा वेगम रांड नां हो ज्यावै।

सायद तन्नै पत्तो कोनी
जीवन मे वस अेक वार चढै।
तिरिया रै तेल ओर हम्मीर हठ
नही वदै भी दूजी वार चढै।

यो प्रण है मेरो सुण खिलजी
जे महाकाळ भी आवैगो।
मेरै जीतां जी मोहम्मद स्या
बी रै भी हाथ नां आवैगो।



खिलजी रै मन री खीझ

राजा हम्मीर गो उत्तर जद
जा दूत सुणायो खिलजी नै।
तो अब थार तो मन ही मन
पड गयो सोचणो खिलजी नै।

के आज धरा पर अब भी है
मन्नै यूं उत्तर देवणियो ?
वे जिन्दो है कोई सूरवीर
मेरै स्यूं टक्कर लेवणियो ?

वैयाँ तो खिलजी की श्राख्याँ मे
रणथम्भोर सदा स्यूँ ही ।
रड़कै हो अर चावै हो वी नै
सर करणो पैल्याँ स्यूँ ही ।

हो रणथम्भोर रियासत पैली
जी नै सर करणै ताणी ।
अर वीर राजपूताँ सागै
तावत अजमावण रै ताणी ।

पुण राखी ही खिलजी मन मे
क्यूँ कि वीरा हा क्यूँ कारण ।
अेक तो या रियासत जालूदीन
खिलजी की हार रो ही कारण ।

जालूदीन खिलजी काको
सुलतान अलादीन खिलजी रो -
हो, अर ईं रै सागै ही वो
मुसरो भी सागी खिलजी रो ।

जद वो सुलतान हो दिल्ली को
तो रणत-भँवर जीतण ताणी ।
सन बारा सो इकाणवै मे
श्रायो हो रण करणै ताणी ।

पण जद हम्मीर स्यूँ टकरायो
तो लेणाँ रा देणा पड़ग्या ।
गढ रणत-भँवर नै जीतण रा
सैं मनसूबा ढीला पड़ग्या ।

पाछो भाग्यो दिल्ली कानी
वो ज्यान बचा की मुस्किल स्यूँ।
मुमरं री या हार डील मे
आग लगारी ही तब स्यूँ ।

दूजो कारण हो खास अेक
मन मे मुल्तानें दिल्ली रैं ।
वि राजपुताने रो यो गढ
नजदीक पडं हो दिल्ली रैं ।

दिल्ली स्यूँ रण-थम्भोर किलै
तक पन्द्रह दिन को रस्तो हो।
सेनां नें कूच करण ताणी
पड़र्यो क्यूँ ज्यादा सस्तो हो।

तीजो कारण हो कि यो गढ
दुर्गम हो राजपुतानें मे ।
नामी दुरभेदता ही ईं की
पूरें ही राजपुताने मे ।

ईं लिये चढाई करणे री
गढ रणत-भँवर पर कई वार।
अपणें मन मे पक्को-पक्को
खिलजी कर राख्यो हो विचार।

पण क्यूँ तो लडणें रैं ताणों
कोई मोको कोनी पार्‌यो हो।
अर क्यूँ हम्मीर री देख वीरता
मन ही मन घबरार्‌यो हो ।

पण यूं उत्तर देणो हम्मीर रो
चुभग्यो हो वण को कांटो।
खिलजी रै मन में यो उत्तर
लाग्यो ज्यूं गालां पर चांटो।

अपमान-जनक उत्तर हम्मीर रो
खिलजी सैण नां कर पायो।
तन मन मे आग लागगी अर
आंख्यां सूंन उतर आयो।

ज्यूं भूखो कोई नाहरियो
गुस्सै मे दहाड़ मारी होवै।
ज्यूं छेड्यां पाछै नाग कोई
काळो फुंकार मारी होवै।

ज्यूं फटतां ही ज्वालामुखि पर्वत-
रै मुख स्यूं धूंवो निकळै।
वैयां ही गुस्सै मे खिलजी री
नास्यां स्यूं धूंवो निकळै।

फूंकार मारतो गुस्सै में
इन्नै-उन्नै डोलण लाग्यो।
धिक्कार है मेरै जीणै में
खिलजी मन में सोचण लाग्यो।

जद अेक छोटो सो राजपूत
देर्‌यो है मन्नै यूं उत्तर।
है बात डूब मरज्यावण री
लानत है ईं सुल्तानी पर।

सेनां नैं त्यार करी जावै
झट स्यूं फरमान कर्यो जारी।
सर रणत-भंवर गढ नैं करणो
है, करली जावै तैयारी।

फिर समाचार भेज्यो जगरा
अर भोजराज नैं बुलवाली।
पूछण लाग्यो कोई उपाय
अपणो दुःख वीं नैं समझावी।

बोल्यो रै भोज! लडा कोई
तिकडम जी स्यूं कर लेवूं सर।
मैं लड हम्मीर स्यूं रण मांही
हम्मीर हठी रो रणत-भंवर

अपमान कर्यो हो वो तेरो
अब मौको है जे चावै तो।
बदलो तेरो लेल्यूं वीं स्यूं
जे तूं उपाय बतलावै तो।

तो भोज कहण लाग्यो खिलजी
जी री सेना मे वीरम दे।
जाजा सा सूर-वीर होवै
वी नैं कुण जीत सकै है कदे?

तूं जिण्यो सोचर्यो है मन में
जितणों सौरो यो काम नहीं।
पण मैं जे बदळो नही लियो
तो भोज मेरो भी नाम नहीं।

अब काळ वणैगो सुण खिलजी
यो भोज हम्मीर हठीलै रो।
अब खोटो दिन आ गयो समझ
सुण रणत-भँवर रै किल्लै रो।

मैं अेक उपाय बतार्यो हूँ
तन्नैं सुण ध्यान लगा री तूं।
जे नई फसल कटणै स्यूं
पैल्यां, सेना नैं भिजवावी तूं।

हमलो हम्मीर पर कर देवैं
तो काम तेरो बण ज्यावैंगो।
रण करणैं लगज्यागो हम्मीर
तो फसल काट नही पावैगो।

तो बिनां नाज रै कद तांणी
आखिर वो रण कर पावैगो।
अन्न रा भण्डारा खाली होतां-
ही ढीलो पडज्यावैगो ।

पण जल्दी कर, ई साल फसल
है चौखी वी री अर जे कदै
वा फसल पूँचगी पच की
सांई-सेनी गढ रै मांय बदै

तो फिर हम्मीर नैं तूं के
तेरो खुदा जीत नही पावैगो।
जे समझदार है तो जल्दी कर
नही पाछै पछतावैगो ।

दूसरो–जुद्ध

भोजराज री वातां मे जद
वजन लग्यो क्यूं खिलजी नें ।
तो चाल बाज कपटी खिलजी
खुस होको मन तेरा सौ मे ।

वो अपणी सेनां नें हम्मीर स्यूं
लडनें ताणी कर तैयार ।
दो लाख सैनिकां सग भेज्या
वो घुड-सवार अस्सी हजार ।

अलूग खां अर नुसरत खां
दो सेनांनायक सग– भेज्या ।
दोन्यां नें अेक साथ ही वो
सर रणत-भँवर करणं भज्या ।

पहली सेनांनायक अलूग खां
"ब्यानां" री हो प्रान्तपाल ।
अर दूजो नायक नुसरत खां
हो गांव कडा री प्रान्तपाळ ।

दोन्यूं ही वीर लडाकू हा
झट हुक्म मान सेना लेकी ।
चल पड्या रण करण रै ताणी
वै अल्लाह हो अकबर कै की ।

सेनां टिड्डी दळ री नांई
वढती वढती आगे आई ।
झांई रो अेक ठिकाणो हो
वी तांणी सेनां वढ आई।

अधिकार जमां की झांई पर
अलूग खां लूट करी भारी ।
फिर रणतभँवर नें कूच करण-
री करणें लाग्यो वो त्यारी ।

है जठै वस्योडो आजकाल
"नै-गाव" वी जगां पर पैल्यां ।
अेक गांव राजपूतां रो हो
झांई रै नाम स्यूं वो पैल्या ।

झांई स्यूं थोडी दूरी पर
गढ रणतभँवर हो पच्छिम मे ।
दोन्यूं सेनां-नायक सेनां ले
वढणें लाग्या पच्छिम मे ।

सेनां आगै वढती ही गई
गढ रणत-भँवर कन्नै आयो ।
तो अलूग खां राजा हम्मीर नें
फिर सदेसो भिजवायो ।

सुण ओ हम्मीर मेरै मालिक
को झगडो तेरै स्यूं कोनी ।
मुलतान रै मन मे तेरै लियै
कोई भी वैर-भाव कोनी ।

अक्कल स्यूं काम ले ओ हम्मीर
बे मतलब रै झगडै नै टाळ ।
खिलजी रै देस-द्रोहियां नै
तूं लौटा दे मार डाळ ।

तूं सोच जरा जक्का सरणागत
खिलजी रा कोनी होया ।
खिलजी रा ही बै स्वामिभक्त
अर निष्ठावान नही होया ।

जद मुसलमान होकी भी वै
खिलजी रा कोनी रया सगा ।
के न्हाल करैगा तन्नै वै
तनै भी देज्यावैगा दगा ।

बां स्यूं उम्मीद चोखै व्युहार की
राखै तो यो धोखो है ।
इं लिये तन्नै समझार्यो हूं
तूं समझ हाल भी मौको है ।

नही तो तेरी फिर तूं जाणै
तेरै ही भलै री कैर्यो हूं ।
बस हां या नां तेरै उत्तर रै
इन्तजार मे रैर्यो हूं ।

जो लिखी सर्त मंजूर नही
तन्नै तो रण करणै ताणी ।
होज्याई त्यार हम्मीर राव
रणभूमी मे मरणै ताणी ।

सदेस अलूग खाँ रो सुणकी
हम्मीर मन हीं मन मुस्कायो।
फिर यूँ सदेसँ रो जवाव
दे पाछो दूत नैं भिजवायो।

सुण अलुग खाँ म्हे राजपूत
हाँ, अक वार जो कह देवाँ।
जद वचणाँ मे वन्धज्यावाँ तो
फिर पाछो वचन नही लेवाँ।

म्हे वहदी सरणागत री रक्षा
करस्याँ तो फिर करस्याँ ही।
अपणै पुरखाँ री आण रै लिये
मरस्याँ तो फिर मरस्याँ ही।

तूं तो के है सुण अलूग खाँ
म्हे महाकाळ स्यूँ भिड़ज्यास्याँ।
चौहाँण वंस रै कुळ री पण
मरियादा पूरी कर ज्यास्याँ।

म्हे साही सेनाँ स्यूँ सुण ले
डट कर की टक्कर लेवाँगा।
जवाब ईंट रो आलूग खाँ
म्नें पत्थर स्यूँ देवाँगा।

कुण मरसी कुण जिन्दो रैसी
तूं इं चक्कर मे मतनाँ आ।
होणी तो होकर ही रैसी
तूं मन्नैं ज्यादा नाँ समझा।

—मीर महाराष्य

म्हे ज्यांन हथैळी पर लेकी
हाँ त्यार लडण-मरणै तांणी।
दिल्ली री साही सेनाँ रो
रण मे स्वागत करणै ताणी।

है इस्टदेव कर भेरो
दुस्मण स्यूँ घबराऊँ कोनी।
है मात भवानी री सोगद
सरणागत लौटाऊँ कोनी।

अलूग खाँन अर नसरत खाँ
हम्मीर राव रो सुण उत्तर।
अपणी अपणी सेनाँ लेकी
चल पड्या पूरी तैयारी कर।

किल्लै रै स्हारै डाल डरा
डटग्या रण-भूमि रै माँही।
दोन्यूँ ही यूँ जाकी हम्मीर स्यूँ
भिडग्या रण-भूमि माँही।

ऊँठी नै कर लीनी हम्मीर भी
अपणी सगळी तैयारी।
फिर दोन्यूँ कानी स्यूँ ही श्रेयाँ
होवण लाग्यो रण भारी।

रजपूत करै हा रक्षा-रण
अर वार करै हा उपर स्यूँ।
च्यारूँ कानी स्यूँ अस्त्र-पास्त्र
फेंकै हा किलै रै उपर स्यूँ।

सगये भगवरी प्रक्षे-पास्त्र
श्रेक नुसरत खाँ री छाती मे।
श्रा लग्यो श्रचानक श्रोर घाव
कर गयो वीर की छाती मे।

निस्प्राण हो गयो नुसरत खाँ
तो भगदड मचगी सेनाँ मे।
सेनाँनायक रै मरताँ ही
झट सोक छा गयो सेनाँ मे।

भावनाँ पराजय की भरगी
साही सेनाँ मे छिण भर मे।
रणवीर बाँकुरा राजपूत
हालात समझग्या पल भर मे।

दी गई ढील रक्षा-रण मे
श्रर झट किल्लै स्यूँ बारै श्रा।
मुस्लिम सेनाँ रै घेरै पर
श्रेकदम्म जोर स्यूँ टूट पड्या।

यूँ जोरदार ई हमलै नै
श्रलूग खान नही सह पायो।
जल्दी स्यूँ श्रपणी सेना ले
झाँई तक पाछो हट श्रायो।

फिर समाचार भेज्यो दिल्ली
नुसरत खाँ रै मर ज्याणै रो।
श्रर रणतभँवर स्यूँ साही सेनाँ
रै पीछै हट ज्याणै रो।

खिलजी री रणत-भंवर पर चढ़ाई

सदेस अलूग खाँ को पाकी
खिलजी मन ही मन रुस्ट होयो।
नुसरत खाँ रण मे खेत होयो
या सुण की भारी कस्ट होयो।

साही सेनाँ पीछै हटगी
यो समाचार सुणताँई वो।
गुस्सै मे भर की त्यार होयो
खुद रण मे जावण ताँई वो।

अपमान भरी या हार नही
धरदाम व र सक्यो महनस्याह।
झुंझनाय आपरी सेनां ले, रण
करण चल पड्यो सहनस्याह।

वो समझ गयो खुद चलै विनां
अब पडणो है या पार नही।
गढ रणतभँवर जीतणो कोई
बच्चारो है खिलवाड़ नही।

या सोच-मोच की बादस्याह
मन ही मन मे घबरार्‌यो हो।
पण महजां ही वो सत्रु आगै
झुकणो भी नही चार्‌यो हो।

ईं ताणी आखिर मे सोची
घबरायां काम चलै कोनी।
जो होगी सो देखी जागी
होणी तो कदे टलै कोनी।

बाम्मी मे मे हाथ दियो है तो
अब नाग-राज स्यूं के डरणो।
या खुदा तेरे ही हाथ माँय
है अब तो जीणो अर मरणो।

साही सेनां जद चाली तो
बादळ बण धूल उडण लागी।
अल्लाह हो अक्बर री बोली
नभ-मण्डल मे गूंजण लागी।

हम्मीर महाकाव्य

हाथी चिंघाड़्या और अस्व
सेना सरपट दौड़ण लागी ।
लाखाँ री संख्या में पैदळ
सेनाँ पीछै-पीछै भागी ।

दिन रात बिनाँ बिसराम लियाँ
बढ़ती ही गई साही सेनाँ ।
कुछ दिन में ही चलताँ-चलताँ
यूँ पूँच गई झाँई सेनाँ ।

झाँई में अलूगखाँ स्यूँ मिलकै
खिलजी रणनीति करी त्यारी ।
फिर रणत-भँवर नैं जीतण रो
मन में ले मनसूबो भारी ।

भारी सेनाँ नैं साथ लेय
चल दीन्यो पूरी त्यारी कर ।
अर आकी डेरा डाल दिया
रण नाम री अेक पहाड़ी पर ।

ईं पहाड़ी पर स्यूँ सामी हीं
दिखै हो रण-थम्भोर किलो ।
यो तीन कोस लाम्बी दिवार रो
भीम काय घनघोर किलो ।

समुन्दर की तह स्यूँ पन्द्रा-
सौ फुट री ऊँची ऊँचाई ।
अर च्यारूँ-मेर दिवारां रै
ही बणी घणी गहरी खाई ।

ईं किल्लै री सुरक्षा नैं
मजबूत बणार्‌या हा मिल की
पांच विसाल सरोवर अपणी-
अपणी छात्यां फैला की ।

दुर्गम अजेय गढ नैं लख की
खिलजी री आंख्यां पथरागी,
काळजो कॅंप-कपा गयो और
मन मे मुरदानी सी छागी।



मोहम्मदस्या री क्रोध

जद मोहम्मदस्या नै पतो चल्यो
खुद खिलजी रण करणै ताणी।
आग्यो है दिल्ली स्यूं चल की
खुद रणत-भँवर किल्लै ताणी।

तो मौको चोखो देख वीर रै
मन मे झट जागी इच्छ्या।
अपणै सरणागत-रक्षक पर
ले प्राण लुंटावण री इच्छ्या।

अेक रोज अचानक मोहम्मदस्या
राजा हुम्मीर कन्नै आयो।
आदाब वजा हो गयो खड्यो
आंख्यां मे पाणी भर ल्यायो।

अर बोल्यो ओ रणधीर, वीर
सरणागत-रक्षक महाराज !
थानै विचार मेरै मन रा
करणों चावूं हूं अर्ज आज।

हे महाबळी अब यो विनास
मेरै स्यूं नही देख्यो जावै।
हालत गढ रणथम्भोर किल्लै
री देख्यां आख्यां भर आवै।

अक मेरी ज्यां की खातर कितणी
ज्यान गई है वीरां री।
देखी नही जावै मेरै स्यूं
अब और मौत रणधीरां री।

रणवीर बांकुडा राजपूत
होर्‌या है खत मेरै तांई।
अर मैं बैठ्यो-बैठ्यो देखूं
घर मे अक कायर री नांई।

ऐयां रैं जीणैं स्यूं तो है
चोखो यूं मेरो मर ज्याणो
लानत है मेरो महलां मे
बैठ्यो रहको सुख स्यूं खाणो।

ई ताणी थाँस्यूं विनती है
मन्नै भी रण मे जावाद्यो।
आं वीरा सागै रण भूमि मे
रण-कौसल दिखला बाद्यो।

है कसम खुदा की रण-भूमि
मे जाको जग मचाऊँगा ।
जद तक मेरी ज्यां मे ज्यां है
मैं पीठ नही दिखलाऊँगा ।

मैं भी पठाण री बेटो हूँ
टकराज्याऊँगो खिलजी स्यूं ।
अर वीर राजपूतां सागै
जा भिडज्याऊँगो खिलजी स्यूं ।

ओ महाराज हम्मीर हठी
थारै चरणां मे सीस झुका ।
रण मे जाणै री लेण इजाजत
आज आयो है मोहम्मदस्या ।

जे नही इजाजत द्योगा तो
मैं सरण छोड़ की चल द्यूंगो ।
खिलजी री सेनां मे जाकी
मैं आत्म-समर्पण कर द्यूंगो ।

यो तो कोई इन्साफ नही
सरणागत रण नही करण सकै ।
रण-भूमी मे लडतो-लडतो
वीरां री ज्यूं नही मरण सकै ।

है बात डूब मर ज्याणें री
मेरी तरकस मे तीर नही ।
होवी पठाण रो बेटो रण मे
चला सकूं सममीर नहीं ।

सरणागत होणें रो मतलब
यो नही कि मैं हूँ वीर नही ।
पूरी साही सेना मे अब भी
मुझ सो है कोई वीर नही ।

या नही बडाई है कोरी
मैं सांची-सांची कैह्‌र्‌यो हूँ ।
खाली थारै आदेस मिलण-
रै इन्तजार मे रैर्‌यो हूँ ।



हम्मीर को मोहम्मदस्या नैं समझाणों

मनस्या सुण की मोहम्यदस्या की
हिवडो हम्मीर रो भर आयो।
है वीर लडाकू सरणागत
या जाण हिये मे सुखपायो।

सोची यो भी है नक्की ही
कोई वीर-मायडली रो जायो।
है धन्य वीर, स्याबास तनै
यूँ कह मन ही मन हरसायो।

पण फिर मन मे सोची आखिर
सरणागत तो सरणागत है।
ईं री सहायता लेवूं तो
मन्नैं धिक्कार है लानत है।

यूँ सोच विचार होयो वदळो
अस्दम सुत्येडो सो जाग्यो।
धीरज स्यूं समझावण ताणी
मोहम्मदस्या नैं कैवण लाग्यो।

के बात करै है मोहम्मदस्या
म्हे राजपूत हाँ लड जास्याँ।
वचणा रै ताणी अेक बार
तो महाकाळ स्यूं भिड ज्यासा।

राजपूत रै तो रैकारै, को-
ही गाळ होवै है सुण।
जद म्हे म्हारी पर आज्यावाँ
तो म्हानै रोक सकै है कुण?

अब तेरी बात नही मोहम्मदस्या
तूं क्यो परेसान होवै?
तूं जा महला मे जाकी सो
घर हाळी बाट तेरी जोवै।

म्हारी चिंत्या नै छोड बावळा
क्यूं दुख स्यूं दुबळो होवै?
अब तो सवाल है मूंछ्यांरो
अब यो रण बद नही होवै।

मेरै जीतां जी खबडदार
जे बात करी तूं जाणैरी।
अब ज्यान तेरी बणगी है सुण
इज्जत चौहांण घराणैरी।

खिलजी स्यूं तेरी रक्षा को
है वचन हम्मीर हठीलै को।
मत भूल कि तूं सरणागत है
अब रणत-भंवर रै किल्लै को।

तीसरो–जुद्ध.

ऊँचे परकोटै पर हम्मीर
हो खड्यो देखर्यो हो सेनां ।
खिलजी री च्यारूं-मेर किल्लै-
रैं फैल गई ही थल सेनां ।

वो इन्तजार मे हो कद सत्रु
गढ की खाई तक आवें ।
तो चाण-चुके ही उपर स्यूं
रक्षा-रण सुरू कर्यो जावें ।

जद देख लियो अब मोको है
सत्रु फसग्यो है चक्कर मे।
तो परकोटे रै नीचै आ
ली वणा योजना पळ भर मे।

अर फिर आदेस दियो वीरो
रक्षा-रण सुरू कर्‌यो जावै।
परकोटे रै हर कगूरै पर
झट सैनिक भज्या जावै।

सेनां तो पैल्यां स्यूं ही खडी
ही रण करणै ताणी तैयार।
चढर्‌यो रो चाव सत्रु-मारण-
रो आशा रो हो इन्तजार।

झट ले हाथां मे प्रक्षे-पास्त्र
अर करकी धनुस बाण धारण।
परकोटै रै कगूरां उपर
चढग्या सत्रु नै मारण।

फिर अेक साथ ही चल्या बाण
अर प्रक्ष-पास्त्र छोड़्या प्रचड।
अर फेंकण लाग्या उठा-उठा
की भारी-भारी सिला-खड।

कुछ गरम तेल स्यूं भर्‌या
कडायां मे स्यूं लेकी गरम तेल।
फेंकण लाग्या माही सेनां पर
बळतो-बळतो गरम तेल।

तो हाहाकार मचण लागी
खिलजी री सेना रै मांही।
ई जोरदार हमले स्यूं अेकदम
माच उठी त्राही-त्राही।

हज्जारूं सैनिक गरम तेल स्यूं
झुळस-झुळस की खेत होया।
हज्जारूं सिलाखड नीचै दब
मरग्या माटी रेत होया।

हज्जारां तीर चल्या अेकदम
हज्जारां रा लेगया प्राण।
क्यूं बच्या खुच्या घायल योधा
भाग्या पाछा ले बचा प्राण।

ई जोरदार टक्कर स्यूं खिलजी
सेनां सग पीछै हटकी।
ओज्यूं से हमलै रै ताणी
तैयारी करण लग्यो डटकी।

कुछ दिन ताणी रण बंद रयो
यूं गरमी री रुत आण लगी।
आमां पर फूट पडी कूंपळ
काली कोयल कूंकाण लगी।

लू चलण लगी दिन रै मांही
तपती चट्टानां भभक उठी।
भीसण गरमी स्यूं सागी धाट्या
ज्वाळामुखि सी धधक उठी।

तपती दोपारी में साही
सेनां री झुळस गई काया।
महरम पट्टी रो काम करै-
ही, पेड़ां री सीतळ छाया।

यो किलो नहीं सर होवैगो
या सोच सैनिक घबरार्याहा।
पण खिलजी रै डर स्यूं सारा
चूं तक भी कर नीं पार्याहा।

अर ऊंठीनैं सैं राजपूत
विजै-उल्हास मनार्या हा।
रग-रग में नाचै ही खुसियां
मस्ती मे भर गी गार्या हा।



नरतकी धारा-दे री कथा

हम्मीर आपरै किल्लै में
आगै रै रण री तैयारी।
करणै रै तांणी अेक रोज
बुलवाई राज-सभा भारी।

बी राज-सभा में मोहम्मदस्या
भी आयो हो भाई सागै।
सेनापति रतीपाल भी बैठ्यो
हो वीरमदे रै आगै।

राजा हम्मीर रो मां-जायो
भाई हो छोटो वीरमदे।
मोट्यार सजीलो हो सत्रु-
रै हक नै खोटो वीरमदे।

रणमल, जाजो, सरदार सभी
होग्या हा भेळा आकर की।
कुछ स्याणा नगरवासियां नै
भी आदर सहित बुलाकर की।

वर लीन्या भेळा ग्रौर मत्रणा
रण-सम्बन्धी पूरी कर।
ग्रर मोज मस्ती रै लिये नरतकी
धारा-दे नैं बुलवा कर।

देखण लाग्या सै निरत-कला
ग्रर झूमण लाग्या देख नाच।
मरदग, बाँसरी बीणा री
धुँन वजी शुरू होगयो नाच।

जद निरत कळा मे निपुण
नरतकी धारादे नाच लागी।
तो इन्दर री पछरा रंभा-
भी देख नाच नैं सरमागी।

जद मटक-मटक मटकाय कमर
बा मस्त होय नाचण लागी।
तो मुडी कमर ग्रँयाँ जी नै ळख
इन्द्र-धनुस भी सरमागी।

जी जगाँ नाचरी ही धारा
बा जगाँ दूर स्यूँ खिलजी नैं।
दीखै ही सावळ साफ-साफ
साही लस्कर स्यूँ खिलजी नैं।

नाचण लागी जद धारा-दे
तो छम छम-छम बोली पायल।
खुदरै खैमाँ मे बैठ्ये खिलजी-
रै मन नै करगी घायल।

जद अस्त होवतै सूरज री
धारा रै तन पर पडी किरण
तो देख दिरस नै वी खिलजी रो
हुयो काळजो झरण-झरण।

सूरज री किरणां री लाली मे
धारा अंगां लाग रयी।
खिलजी नै ज्याणू नभ-मण्डळ
मे कोई अपछरा नाच रयी।

क्यूं जाण-बूझ की धारा दे
खिलजी नै नाच दिखारी ही।
मन ही मन खिलजी नै छुडण
री एक योजना वणा री ही।

नाचतां-नाचतां अेकदम स्यूं
वा नजर मिला की खिलजी नै।
अपना कूल्हा मटका-मटका
दिखलावणे लागी खिलजी नै।

फिर वार-वार पग री अेडी
वा यूं दिखलाई खिलजी नै
ज्याणू वा समझ रयी होवै
अेडी रै नीचे खिलजी नै।

अपमान नाच मे खुद को नही
वरदास कर सक्यो जद खिलजी
तो गुस्सै मे भर की पूच्छयो
अपणे सेनापति नै खिलजी।

वे साही सेनाँ मे है कोई
ग्रैसो तीरन्दाज वीर ?
जो ईं नाचती नरतकी नैं
दे छेद ग्रठे स्यूं मार तीर।

सेनापति बोल्यो जहाँपनाँ
कैदी है तीरन्दाज ग्रेक
ग्रपणी सेनाँ मैं उड्डणसिंघ
वो छेद सकै है तीर फेंक ।

वो ईं नाचती नरतकी नैं
पळ भर मे मार गिरा देसी।
मरणो ही पडसी बी नैं जद
उड्डण सिंघ तीर चला देसी ।

झट बुलवाकी उड्डणसिंघ नैं
ग्रादेस दे दियो सहनस्याह ।
हाथाँ री बडी काट कैद स्यूं
मुकत कर दियो सहनस्याह।

उड्डण सिंघ मार्‌यो तीर
जा लग्यो धारा दे की छाती मे।
तो वही खूंन की धार ग्रेकदम
बी धारा की छाती मे ।

गिर पडी धरा पर धारा-दे
ग्रत होवी राजसभा रै माँय्।
ईं घाण-चुके की वारदात स्यूं
छाग्यो सोक सभा रै माँय् ।

ई सग्मनाक हमलै नै नही
वरदास कर सक्यो मोहम्मदस्या
तो धनुष वाण नै उठा हाथ मे
कहण लग्यो यू मोहम्मदस्या ।

हे महाराज ! हुकम द्यो अब
मैं बदळो लेणो चावूं हूं ।
धारा रै बदलै मैं खिलजी
नै मार गिराणो चावूं हूं ।

मारूंगो तीर सबद भदी
तो खिलजी बच नही पावैगो ।
मेरो यो तीर दुस्ट खिलजी री
ज्यां निकाळ ले ज्यावैगो ।

निरदोस नरतकी री हत्या
बा भी अरु कायर की नाँई ।
हत्यारो खिलजी कर दीन्ही
या जाण दुःख उठ्यो मन माँही ।

तो वीर अधीर होयो अकदम
मन मे मसूत्रो वणा लियो ।
आज्ञा हम्मीर री लिये बिनाँ
ही तीर धनुस पर चढा लियो ।

फिर साध निसाणो धनुस खेंच
मोहम्मदस्या तीर चलाण लग्यो
तो झट हम्मीर कनै जाकी ।
मोहम्मदस्या नै समझाण लग्यो ।

रूक ज्या मोहम्मदस्या मान कयो
यो काम नही उच्चित तेरो ।
मत भल कि सुल्तानें दिल्ली
तो है सिकार खाली मेरो ।

जे खिलजी मरज्यावेंगो तो
मैं कुण स्यूं लडणं जाऊंगो ।
सो मजो किरकरो होज्यागो
मैं जुद्ध नही कर पाऊंगो ।

जद धनष चढ़ा ही लियो है
तो उड्डणसिंघ री छाती में ।
है मार खीच की मोहम्मदस्या
यूं जा बीं दुस्ट री छाती में ।

हुकम हम्मीर को मिलतां ही
मोहम्मदस्या मार्‌यो अेक तीर ।
जो उड्डणसिंघ री छाती नें
पलभर रे मांही गयो चीर ।

ो बही खून की धार और
ड्डणसिंघ गिरग्यो धरती पर ।
अन्त होयो उड्डणसिंघ को
र गयो दुस्ट अेक पळ में मर ।

उड्डणसिंघ रे मरतां ही हळचळ
मचगी साही सेनाँ में ।
भैभीत होया सेनिक, मुरदानी
छागी सारी सेनाँ में ।

चोथौ-जुद्ध

खिलजी दिल्ली स्यूं ओज्यूं सैं
अक भारी सेनां मगवाई ।
भारी सेनां अेक सग मिलकी
किल्लै री भरण लगी खाई ।

कंकर, पत्थर लकड़ी, माटी
स्यूं सैनिक भरण लग्या खाई ।
अर घास फूस नै फेंक-फेंक
उपर स्यूं पाट देई खाई ।

सेनाँ उतरादी खाई में
सुरंग बणावण रै ताणी।
बारूद लगा की किल्लैरी
दीवार उडावण रै ताणी।

यूँ खाई रै अन्दर ही अन्दर
सुरंग बणाण लग्या सैनिक।
सारा का सारा ही अपनी
जी ज्यान लगाण लग्या सैनिक।

बारूद भेज दी खाई मे
चमड़ै री थैल्याँ में भरवी।
अब कै खिलजी भी आयो हो
पूरी-पूरी त्यारी करकी।

पण हो हम्मीर भी सावधान
उपर स्यूँ आग गिराण लग्यो।
भर-भर की कडायाँ गरम-गरम
पिघल्योड़ी लाख गिराण लग्यो।

तो आग लागगी खाई में
बारूद फट पडी खिलजी री।
सुरसा रै मुँह सी खाई में
सेनाँ फँसगी ही खिलजी री।

भुनज्यावै है जैयाँ मछली
उबलेडै पाणी रै माँही।
बैयाँ ही खिलजी रा सैनिक
भुनर्या हा खाई रै माँही।

भड़भूजे री भट्टी में जैयां
उछळ-उछळ कै चणो पड़ै।
बैयां ही जद बारूद फटै
तो सैनिक उछळै और पड़ै।

लठ री पड़णे स्यूं ज्यूं कुत्तो
पो-पो करको चिल्लावै है।
बैयां ही खिलजी रा सैनिक
भागै है अर करळावै है।

फिर राजपूत तैयार होया
सामी रण करणे रै ताणी।
किल्लै स्यूं बारै आ दुस्मण नैं
मारण और मरण ताणी।

रणभेरी बजी तो द्वारपाल
गढ को दरवाजो खोल दियो।
हम्मीर हठी ले की सेनां
खिलजी पर धावो बोल दियो।

बह बी हर-हर-हर महादेव
रणवीर बांकुड़ा राजपूत।
भूखे नाहर सा भक साथ
दुस्मण सेनां पर पड़्या टूट।

जय घोस बहादुर वीरां री
भू-मण्डळ में गूंजण लागी।
ऊंठी नै सेना खिलजी की
होकी तैयार लड़ण लागी।

सेनिन स्यूं सेनिक भिडग्या अर
हाथी स्यूं हाथी टकराया ।
तलवारां पर तलवार चली
घोडा दोड्या, गज चिघडाया ।

अगणित तलवारां अेक साथ
रण-भूमि मे अैयां चमकी ।
ज्याणूं तो दस्यूं दिसावां मे
ही अेक साथ विजळी चमकी ।

चिघाड्या हाथी अर घोडा
ज्याणूं गरज्या होवं बादळ ।
कितणां ही सेनिक खत होग्या
अर कितणां ही होग्या घायल ।

गाजर मूली ज्यूं कट्या सीस
धरती सोणित स्यूं लाल होई ।
रुण्ड-मुण्ड लास्यां री ढेरी
पग-पग पर तत्काल होई ।

हम्मीर आपरो धनुस उठा की
झडी लगा दी बाणां री ।
बो आहूती रण-भूमि मे
देवण खिलजी रै प्राणां री ।

हूँकार मार सत्रु सेनां पर
महाकाळ सो टूट पड्यो ।
ज्यांणू बकर्यां रै रेवड पर
भूखो नाहरियो कूद पड्यो ।

हम्मीर महाकाव्य

भर जोस वीर रण-भूमि में
सत्रु-संघार कर्‌यो भारी ।
ईं दो दिन रैं रण रैं मांही
खिलजी री हार होई भारी ।

नब्बे हजार साही सेनां
आगई काम ईं रण मांहीं ।
घांटी लास्यां स्यूं मिड़ण लगी
ईं महा भयंकर रण मां हीं ।

घायल मुसलमान जोधां
करलाण लग्या घाटी मांही ।
चील, कांवळा, गीध मेळा
होवण लाग्या घाटी मांहीं ।

आंतड़ियां खेंचण लग्या गीध
भर मांस विखरग्यो जगां-जगां ।
ले भुजा खोपडी चील कांवला
उड़णे लाग्या जगां-जगां ।

भर मोज गादड़ियां रै होगी
हौवा-हौवा करता रात्यूं ।
मुरदा खा-खा की मस्त होय
आपस में लड़ण लग्या रात्यूं ।

यूं दो दिन रैं रण में घाटी
समसांण नजर आवण लागी ।
भर साफ-साफ खिलजी नै
अपणी हार नजर आवण लागी ।

जितणां भी जतन कर्या खिलजी
गढ रणत-भंवर नें जीतण रा।
वैं सै उपाय बेकार गया
गढ रणत-भंवर नें जीतण रा।

"ताऊ" खिलजी री किस्मत मैं
ज्यणूं के रोडो अडर्यो हो।
रण में खिलजी रो कोई भी
पासो सीधो नहीं पडर्यो हो।

ग्रेसी हालत होगी खिलजी री
जैयां सांप छछुन्दर नें
पकड्यां पाछे नां छोड सकै
नां निगळ सकै बो ग्रन्दर नें।

वैयां ही खिलजी रणत-भंवर
नां जीत सकै नां छोड सकै।
सुख छोड मारा जोगी री नांई
किल्लै नें दिन-रात तकै।



बरखा-बखाण

के करूँ के नहीं करूँ सोच
होगया बावळो सो खिलजी ?
अपणे मन में क्यूं भी तै नीं
कर सक्यो तावळो सो खिलजी ।

अैयां ही निकल्यो गयो टेम
अम्बर मे बदली छाण लगी ।
गरमी रो मौसम बीत गयो
अर बरखा री रुत आण लगी ।

नाचण लाग्या मोर देख
घनघोर घटा नभ-मण्डल मे
चातकडै री मीठी पी-पी
गूंजण लागी भू-मण्डल मे ।

अम्बर मे च्यारूं-मेर अेकदम
काळा बादळ उमड पड्या ।
अर तपती धरती री छाती पर
गरज-गरज की बरस पड्या।

जैयां कोई बुद्धिमान मिनख
विद्या पाकी नम ज्यावै है ।
बैयां ही बादळ धरती पर
लुळ-लुळ पाणी बरसावै है ।

बादळ री घोर गरजनां स्यूं
सारी घाट्यां गरजण लागी।
नभ मे घनघोर घटा छागी
बिजळी चम-चम चमकण लागी ।

दुस्टांरी प्रीत कदे भी जैयां
नही थिर हो पावै है ।
बैयां ही बिजळी छिण-छिण अपणी
चम-चमाट दिखलावै है ।

रिमझिम-रिमझिम बरस्यो पाणी
नदियां उमडी ताळाव भर्या ।
कूंपळ फूटण लागी सूखेडा
पेड होगया हर्या-भर्या ।

बहण लग्यो पाणी कळकळ
करतो सगळा नदी नाळा में।
अर जगां-जगां होग्यो मेळो
घाट्यां रै जोहड़ खाळा में।

ताळाब किनारां पर मेंढ़क
यूं टर्र-टर्र टरराण लग्या।
ज्यांणु गुरु-कुळ में टाबरिया
मिल वेद पुराण सुणाण लग्या।

चमकण लाग्या जुगनूं चम-चम
अंधियारी काळी रातां में।
सुण की मन में रस आण लग्यो
चकवै-चकवी की वातां में।

ठंडी पुरवाई चाली तो हर
मन में मस्ती छाण लगी।
परदेस गयोडै बालम री
गोरी नै याद सताण लगी।

पेडां पर झूला पड़्या, ज्यां-
पर कामणियां झूलण लागी।
तीज्यां पर गीत गांवती छोर्यां
वागां में घूंमण लागी।

हर्या भर्या होग्या डूंगर
घरती पर फैली हरियाळी।
वन उपवन महकण लाग्या
फूलां स्यूं भरगी डाळी-डाळी।

ज्यूं जोबन मद मे चूर बीनणी
नई नवेली घूम रयी ।
बैयां ही हरी-भरी होकी
बिरछां री डाल्यां लूम रयो ।

पीवण लाग्या घोट-घोट की
भांग-भगेडी जगां-जगां ।
गांजे, सुल्फे री चिलम खीच
हो मस्त गजेडी जगां-जगां ।

रळमिल की बाग-बगीच्यां मे
सावण रा गीत सुणाण लग्या ।
नाचता-कूदता, झूम-झूम
हप लेकी कुरजां गाण लग्या ।

झर-झर झरता पाणी रा झरणा
मीठी तान सुणाण लग्या ।
तो मस्त जीवडा लोग-बाग
हो भेळा गोठ मनाण लग्या ।



खिलजी रो सन्धी–प्रस्ताव

मूसळाधार ईं वरखा स्यूं
कीचड ही कीचड फैल गयो।
सारी जमीन पर घाटी री
माटी में दळ-दळ फैल गयो।

ईं लगातार री वरखा स्यूं
साही सैनिक घबराण लग्या।
सीळण स्यूं भेळा होकी याने
रात्यूं माछर खाण लग्या।

रासन आणो बन्द होग्यो अर
भूखां मरता परसाण लग्या ।
मेंयां होकी से दु खी नौकरी
छोड-छोड की जाण लग्या।

खळवली मचण लागी अकदम
खिलजी री साही सेनां मे ।
रोटी रै टुकडै रा लाला
पडर्या हा माही सेनां मे।

हाडां रा ढेर सिडण लाग्या
साही लसखर रै आस-पास ।
महामारी फैल गई कितणां ही
ज्वांन मौन रा बण्यां गास ।

यूं साही सेनां पर बरखा
री रुत बण छाई महाकाळ ।
तो मन मे कुटळाई भर खिलजी
गूंथण लाग्यो नयो जाळ।

वो समझ गयो हो चाहे खुदा भी
रण मे सामिल हो ज्यावै ।
जद तक अेको है रजपूतां मे
किल्लो नही जीत्यो ज्यावै ।

सो बार-बार सोचण लाग्यो
कोई तिकडम करणी चाये ।
आं राजपूत रणवीरां मे
कैयां भी फूट पडणी चाये ।

तो बणा योजना चतुराई स्यूं
श्रक सदेसो भिजवायो ।
हम्मीर (रँ) सेनापति रतीपाल-
नै सधी करणै बुलवायो ।

या बात समझ्यो हो खिलजी
जे रतीपाल श्राज्यावैगो ।
तो प्रधान-मन्त्री रणमल या
बरदास नही कर पावैगो ।

कि, प्रधान-मन्त्री रैं होता
सेनापति सधि करण जावै ।
वो होज्यागो नक्की नराज
या खुदा बात जै बण ज्यावै ।

तो होज्या पौबारा पच्चीस
पड ज्याय फूट रजपूतां मे ।
जे आपस मे झगडो होज्या
श्रां महाकाळ रैं दूतां मे ।

तो फिर या बात नणी समझो
यो किलो जीत वी छोडूंगो ।
पासो सीधो पड्यो तो मैं
या फूट डाळ वी छोडूंगो ।

सदेसो खिलजी को हम्मीर नै
दूत सुणायो जादर की ।
तो सधी री मरतां रैं ताणी
सै बातां समझाकर की ।

हम्मीर पठायो रतीपाल
खिलजी स्यूँ बात करण ताँणी।
खिलजी रै मन मे जो कुछ है
बा सारी बात सुणण ताँणी।

हम्मीर अठै ही चूक गयो
मे फूट पडण रा वाँका हा।
वो कूटनीत नही समझ सक्यो
होणी रा खेल भी बाँका हा।

जद रणमल नै पत्तो चाल्यो
रतिपाल गयो खिलजी कन्नै
सधी करणै ताँणी तो वो
क्यूँ वीर अधीर होयो मन मे।

रणमल हम्मीर रो हो प्रधान
बी रै या बात जँची कोनी।
यो स्वाभिमान रो हो सवाल
ई ताँणी बात पची कोनी।

वो बोल पड्यो हे महाराज।
मैं हूँ प्रधान, हक है मेरो।
सेनापति सधी करण जावै
तो के महत्व फिर है मेरो।

यूँ कह जा महलाँ मे सोग्यो
नाराज होयो मन ही मन मे।
यूँ अेक छोटी सी चिंगारी
सोलो बण भडक उठी तन मे।

ग्रोर ऊँठी नै वो रतीपाल
जद साही खेमैं में पूंच्यो ।
तो खिलजी वी री ग्राव-भगत कर
घर को हाल-चाल पूच्छ्यो ।

खुद ग्रासण छोड खड्यो हो बीनैं
गळै लगायो सहनस्याह ।
यूं रतीपाल स्यूं भोत घणी
ग्रपणेस दिखायो सहनस्याह ।

जा पळक पांवड़ा विछा दिया
वो वी री खातिर रै मांई।
दे ग्रासण ग्रपणै पास विठा
वी नै ग्रेक भाई री नांई ।

से दरबार्‌यां नै हुकम दियो
खेमैं स्यूं बारै होज्यावै ।
जद तक म्हे बैठ्या वात करां
कोई भी पास नहीं ग्रावै ।

फिर कपटी बादस्याह वी नै
दे की लालच समझाण लग्यो।
पल्लो फैला वी रै ग्रागै
ग्रपणो दुखड़ो बतलाण लग्यो।

मैं ग्रलादीन खिलजी सुलतान
हूं दिल्ली रो सुण रतिपाल ।
सर रणत-भँवर करणो होग्यो
ग्रव मेरी इज्जत रो सवाल ।

मैं यातो समझगयो कि मैं
यो किल्लो जीत नही पाऊँ।
पण बिन जीत्यां ईं गढ ने
मैं दिल्ली के मुंह लेकी जाऊँ।

जे मैं थोडा दिन ग्रौर टिक्यो
मेरा सैनिक मर ज्याणां है ।
ईं गढ जीतण रो मतलब तो
लोहे रा चणा चबाणां है।

पीछै हट जाणै रो मतलब
इज्जत धूळ में मिलाणी है ।
ग्रर ग्रागै बढणै रो मतलब
खुद ग्रपणी मौत बुलाणी है।

मैं इन्नै गिरूँ तो कूवो है
ग्रर उन्नै गिरूँ तो खाई है।
यूं बीच विचाळै लटक्योडी
मेरी ज्यां पर बण ग्राई है।

ईं लिये तन्नै बुलवायो है
तूं समझदार है स्याणो है।
किस्मत स्यूं तूं ग्राग्यो ग्रठै
ग्रब काम मेरो बण ज्याणो है।

ग्रब तक कोनी हार्‌यो हम्मीर
मेरै या बात खटकरी है ।
तेरी सहायता रै तांणी
सुण ! गाडी मेरी ग्रटकरी है।

जे तू म्हारो दे मन्न तो
गाडो मेरी गुडज्याणी है।
नहीं तो अब ईं मुल्तानै-
दिल्ली री खिल्ली उडज्याणी है।

जे तूं देवैगो साथ मेरो
तो ईं किल्लै नें मर करकी।
मैं चल्यो जाऊंगो तन्नै अठै-
रो राज पाट समळा कर की।

कर राज बेवडक रणतभँवर-
रो महाराज वण सुख स्यूं जी।
तेरी घरहारी महाराणी
वण ज्यासी बैठ्यो दारू पी।

तूं राजा बणनै जोगो है
जे राजा बणना चावै तो।
या इच्छ्या पूरी मैं करदयूं
तू मेरै स्यूं मिल ज्यावै तो।

मैं कसम खुदा की खा कैर्यो—
हूं, अपणी वचन निभावूंगो।
जीत्यां पाछै ईं रणतभँवर-
रो राज तन्नै देज्याऊंगो।

मैं तो खाली ईं रणतभँवर-
नैं वस सर करणो चावूं हूं।
है वैर मेरो तो वस हम्मीर-
स्यूं, वी स्यूं लडणो चावूं हूं।

अर जे तूं साथ मेरो रण मे
देवण ताणी होज्या राजी ।
तो फिर इं रण मांही हम्मीर-
स्यूं मार ज्याऊंगो मैं वाजी।

यो दे दे लालच रातीपाल नैं
अपणैं कानी कर खिलजी ।
लेज्या वी नैं अपणैं सागैं
रणवासैं मैं पूंच्यो खिलजी

रणवासै में खुलगी बोतल
खिलजी री भैण बणी साकी ।
भर-भर वी जाम पिलाण लगी
झट रतीपाळ नै बा आकी।



रतीपाल और रणमल रो विसवासघात

यूं सुरा सुन्दरी रै चक्कर-
मे होस खोदियो रतीपाल।
अपणं मन मे विसवासघात-
रो बीज बोलियो रतीपाल।

बुद्धी पर पथ्थर पडग्या अर
दग्गो करणं री ले मन मे।
खिलजी स्यूं हाथ मिला की वो
पाछो आयो हम्मीर कन्नै।

भावी हम्मीर नैं जहर भरी
बातां वहकी बहकाण लग्यो ।
अर भूठ-मूठ री भडकाणं-
हारी बातां वतलाण लग्यो ।

बोल्यो महाराज! सायद खिलजी
री मोत सावडं आई है ।
जो आग लगावण हारी सी
सघो री बात बताई है ।

कह्र्यो है खिलजी जे हम्मीर
अपणी कुंवरी मेरै सागै ।
व्याह्‌वण ताणी राजी हो तो
सन्धी री बात चला आगै ।

नही तो मैं मार हम्मीर हठी-
री कुंवरी व्याह्‌ ले ज्यावूंगो
बीरीं जितणी भी राण्यां है
सबनै सागै ले जाऊंगो ।

खिलजी रै मुंह स्यूं मै थारो
अपमान नही मह पायो हूं ।
रण ताईं मैं ललकार बठै
खुद स्वाभिमान स्यूं आयो हूं ।

महाराज अब तो होवैगो रण
सघी री वातां करो मतां ।
जब तक जिन्दो है रतीपाल
हे महाराज! थे डरो मतां ।

कल रै रण मे मैं खिलजी री
सारी हेकडी भुला द्यूंगो ।
अर मात-भोम री रक्षा मैं
मैं अपणो सीस कटाद्यूंगो ।

अेक बात और है महाराज !
रणमल नही पडर्‌या दिखलाई ।
मैं चल्यो गयो सधी करणे
या बात मान की दुखदाई ।

सायद वे होग्या है नाराज
आखिर सेनां रा है प्रधान ।
जल्दी-जल्दी मे सायद थे
ईं बात पर नही दियो ध्यान ।

पण आज सांझ की सभा-सदां-
नैं सग मे ले थे खुद जाको ।
घणे मान स्यूं महाराज
लेआवो वांनें समझावो ।

यूं चिकणी-चुपडी वातां कर
चल दियो वठै स्यूं रतीपाल ।
अर रणमल रै महलां मे आ
झट कहण लग्यो यूं रतीपाल ।

रणमल जी वैठ्या मत देखो
करल्यो त्यारी मग ज्याणै री ।
महाराज हम्मीर वणा ली है
योजनां थानें मरवाणै री ।

मैं तो खिलजी स्यूं मिलग्यो हूं
जे जीणो चावो तो थे भी
हो ज्यावो मेरै सागै अर
किल्लै स्यूं झट भगल्यो थे भी ।

रणमल बोल्यो रै रतीपाल !
यूं बोल रयो है तूं कैयां ?
ज्यादा दारु पीग्यो दीखै
जो बहक रयो है तूं अंयां ।

जे सूरज पच्छिम मे निकलै
तो भी या बात होवै कोनी ।
राजा हम्मीर रै लिये इत्ता
गिर्‌योड़ा बोल सोवै कोनी ।

जो अब भी सूरज हिन्दवाणो
है पूरै राजपुतानै मे ।
नही होयो इंयां को महाराजा
पूरै चौहाण घराणै मे ।

जो तू हम्मीर रै लिये कह रयो
है वा बात जंचै कोनी ।
सेवक-पालक होवै जबको
सेवक-सघार करै कोनी ।

जंयां सीतळ चदरमा मे
कोई जहर की गुजायस कोनी ।
बियां ही ईं राजा स्यू दुर-
व्यहार री गुजायस कोनी ।

रणमल री श्रद्धा देखी तो
छळ करकी बोल्यो रतीपाल।
मैं तो जार्‌यो हूँ रणमल जी
पण ये थारो राखियो ख्याल।

थारै कन्नै हम्मीर आज
संज्या ताणी नक्की आयो।
पूंचगो दरबारयां सागै
तो मेरी बात समझ ज्यामो।

यूं कह चल दीन्यो रतीपाल
रणमल रै मन में सक भरकी।
ग्रर दिन छिप्यो तो ऊंठो नैं
दरबार्‌यां नैं सग लेकर की।

हम्मीर आंवतो रणमल नैं
जद पड्यो दूर स्यूं दिखलाई।
तो बात कयोड़ी रतीपाल री
बी नै सांच नजर आई।

बो समझ्यो कै ज्याणूं हम्मीर
बीं नैं मारण नै आर्‌यो हो।
पण सही बात या ही कै बो
रणमल नैं मनावण आर्‌यो हो।

राजा हम्मीर दिख्यो आतो
तो डर की भाग गड्यो रणमल।
मिल ज्यावण ताणी साह्रो सेनां
में यूं चाल पड्यो रणमल।

झट किलै स्यूं बारै निकल्यो
अर जा बातळायो खिलजी स्यूं
यूं रणमल, रतीपाल दोन्यूं ही
जाको मिलग्या खिलजी स्यूं।

आं दोन्यां रो विसवासघात
हम्मीर सहण नही कर पायो।
तो पदम-सरोवर पास बैठ
हिवडै रै मां दुख भरल्यायो।

अर लग्यो सोचणं जिण नै मैं
चावै हो भाई स्यूं ज्यादा।
जद बै ही होग्या मेरै स्यूं
विद्रोह करण नै आमादा।

तो नक्को ही यो है प्रताप
होणी रो आंको दोस नही।
बिनास-काळ मैं आंरी बुद्धी
फिरगी आनै होस नही।

होणी माता नै नमसकार
यूं सोच चल पड्यो महलां मे।
पटराणी रगादेवी स्यूं
बतलावण लाग्यो महलां मे।



देवल्-दे

देवळ-दे ही बेटी हम्मीर री
सुन्दर राजकुमारी ही ।
मायड़ री आंख्यां री ज्योति
बाबुळ री राजदुलारी ही ।

चंदा सो मीम्ळ चैरो अर
चंचल हिरणी की सी चितवन ।
जोबन रा चौदा बसन्त नै
पार कर गयो हो जोबन ।

उछल कूद करती आँगण मे
छम-छम पायल छमकाती ।
फिरती ही रहती महलां में
सखियां रै सग हसती गाती ।

अेक दिन सज्या की बागां स्यूं
वा घूम घरां नै आ री ही ।
महाराणी महलां मे हम्मीर रै
सग बैठी बतलारी ही ।

चर्चा बातां मे खुद री सुण
देवल-दे कान लगा बैठी ।
चुपकै स्यूं वा सारी वार्ता
सुणनै मे ध्यान लगा बैठी ।

हम्मीर कैंयो हो महाराणी-
नै, कल रण करणै तांई
जावांगा बाना केसरिया मे
सज-धज की रण रै माँही ।

जे विजय-श्री नही मिल पाई
लडता-लडता मर ज्यावांगा ।
पण पीठ दिखा रण रै माँही
केसरिया नही लजावांगा ।

मन्नै मरणै रो दुख नही है
हां बटी की चिन्त्या जरूर ।
है मन्नै बताओ महाराणी
बीनै मैं कंयां करूं दूर ।

बा मेरै दिल रो टुकडी है
बा मन्नै ज्यां स्यूं प्यारो है।
मैं सोचूं बीरो के होसी
मन्नै या चिंत्या खारी है।

बा घणी लाडली है मेरी
बा मेरो प्राण है महाराणी।
सुख री छाया मे पळी है बा
दुःख स्यूं अणजाण है, महाराणी।

बा खुसियां मेरै महलां री
सोभा है मेरै आंगण री।
बा बागां री कोयळडी है
बा है बहार रितु सावण री।

बीं रै कानी जद देखूं हूं
मेरो हिवडो फट ज्यावै है।
के करूं बताओ महाराणी
क्यूं भी नां समझ मे आवै है।

ई हालत मे महाराणी बीरा
पीळा हाथ भी हो नां सकै।
बा क्वांरी कन्या है ईं ताणी
जौहर भी तो कर नां सकै।

जे बीनै मारणी पडी मन्नै
कुळ धरम निभावण रै ताणी।
हिम्मत नही होवैगी मेरी
तलवार उठावण रै ताणी

तलवार उठा भी ल्यूँगो तो
तलवार चला नही पाऊँगो।
साँची कहर्‌यो हूँ महाराणी
मैं वीं ने मार न पाऊँगा।

यूँ कह् की वीर अधीर होयो
आँख्यां मे पाणी भरल्यायो।
वज्जर री छाती वणी मोम
दुखडे स्यूँ हिवडो पिघल्यायो।

यूँ देख दसा बाबुल की
देवल दे पह्ल्यां तो घबरागी
फिर सारो वातावरण समझ
मन ही मन मे सोचण लागी।

जिण आँख्यां मे बरस्या करता
अगारा आज वां आँख्यां मे।
जीवन मे पैली बार बरसतो
देख्यो पाणी आँख्यां मे।

वा समझ गई मेरो बाबुल
धुळर्‌यो है मेरी चित्या मे।
बाबुल री चित्या देख-देख
वा खुद पडगी ही चित्या मे।

मेरी चित्या मन मे लेकी
बाबुल रण करणं जावंगो।
मन उळझ्यो रैगो मेरे में
तो के रण करणं पावंगो?

वा समझ गई भावुकता मे
वह की बाबुल घबरा्यो है।
ममता मे फस की राजपूत
रजपूती धरम भुलार्यो है।

मडरार्या हा जो वादळ रण-
थम्भोर किले पर समझ गई।
श्रैसी घडी मे, के फर्ज होवै है
बेटी रो, आ समझ गई।

खाण्डो श्रेक महलाँ री दिवार
पर लटक रयो हो बा बीनै
झपट्यो श्रर खीच म्यान स्यूँ
वारै, पकड हाथ मे बा बीनै ।

चाली साछात चडिका सी
सीधी हम्मीर रै सामी जा
फेंक्यो खाण्डो धरणी पर श्रर
गरजी श्रो बाबुल। चाल उठा।

फिर राजपूत री बेटी रो
बा फरज निभावण रै ताँणी।
झट सीस झुका हो गई खडी
गरदण कटवावण रै ताँणी।

यो देख हादसो महाराणी
बोली स्यावास मेरी बटी।
हो गई धन्य मैं श्राज देव
जण को तेरै जैसी बेटी।

बोली देवळ दे बद बावुल
प्राणों रो मोह सतायो है ।
अेक राजपूत री बेटी नें
जद अेसो मोको मायो है ।

ईं राजपूतानें री बेट्यां
प्राणां री परवाह करें नहीं।
मात-भोम रें लिए वदं भी
सीस कटानो डरें नहीं ।

जिन्दगानी रो मोह थे बावुल
जिन्दगानी आणी जाणी है।
ईं मात-भोम रें लिए सदा
बलिदान दियो छत्राणी है ।

जिण प्राणां रें ताणी बावुल
ऊंचो गढ़ रणत-भंवर सर हो।
जिण प्राणां स्यूं चोहांण वंस
रें दाग लागणें रो डर हो ।

जिण प्राणां ताणी सुण बावुल
हिन्दवांणो सूरज डूब जाय।
जिण प्राणां ताणी छत्री कोई
रण करणें स्यूं ऊब जाय।

जिण प्राणां रें मोह् मे हम्मीर
हठीलें रो प्रण टूट जाय ।
ईं स्यूं तो चोखो है मेरा
वैं प्रांण देह स्यूं छूट जाय ।

थे राजपूत हो बाबुल मेरा
कायरता मत दिखलावो ।
है घड़ी परीच्छ्या री बाबुल ।
भावुकता में मतनां आवो ।

जे छत्री धरम नें भूलोगा
इतिहास कळंकित कर द्योगा ।
चौहांण वंस रै पुरखां री
सा आण कळंकित कर द्योगा ।

मैं सीस कटावण रै तांणी
हूं त्यार खड़ी गरदण झुकाय ।
मत सोच विचार करो बाबुल
जल्दी स्यूं थे खांडो उठाय ।

दे मारो मेरी गरदण पर
झट धड स्यूं सीस अलग करद्यो
अर फरज निभा की छत्री रो
पुरखां रो नाम अमर करद्यो ।

चेतो कर बाबुल देख कदै
रजपूती पाग नहीं झुक ज्या ।
ममता रै मोह में फँस तेरो
उठ्ठेडो हाथ नहीं रूक ज्या ।

बेटी री बातां नें सुण की
हिवडो हम्मीर रो भर आयो ।
गद-गद होग्यो मन खुस होकी
आंख्यां मे पाणी भर त्यायो ।

फिर आँख मीच की करड़ी छाती
कर खाण्डो उठ्ठांण लग्यो।
ज्यांणू के सक्ति ही हम्मीर
रो उठ्यो हाथ थर्राण लग्यो।

भारी भारी सो मन होग्यो
आंख्यां मे अंधेरो छाग्यो।
तन मन री सुध-बुध भूल गयो
सिर कै मांय् चक्कर सो आग्यो।

तलवार हाथ स्यूं छूट गई।
गिरग्यो धरणी पर गम खाकी।
यो देख हादसो देवळ दे
झट महला स्यूं बारै भागी।

निरख्यो बाबुल रो अमर प्यार
हिवडै मे प्रेम उत्तर आयो।
देवळ दे री आंख्यां मे स्यूं
आंसूडा बण की छळक्यायो।

पण फेर ध्यान जाग्यो तो झट
निर्णय लेवी अेक भारी वा।
महळां री छत पर जा पूगी
महळां री राजकुमारी वा।

अेकदम स्यूं महलां रै पीछै
हो अेक सरोवर भारी वा।
बी रै मांय् डूब मरण री मन
मे कर लीन्ही झट त्यारी वा।

फिर सीस भुका हो गई खडी
मन ही मन सब नै नमस्कार
कर, याद कर्‌या वारी-वारी
हिवडै मे भर वी घणो प्यार।

ओ वाबुल ! दे आसीस मन्नै
अपणो करतव्य निभा ज्याऊँ
ओ मायडली मैं देख कदै
तेरो नाँ दूध लजा ज्याऊँ

चौहाँण वस रा ओ पुरखो !
द्यो सकती थारी वेटी नैं
इतिहास नाँ तानो दे देवै
हमीर हठी री वेटी नैं ।

मेरी तो डोली चाल पडी
आवो री सखियो ! आवो री !
अव सारी की सारी मिलकी
थे आज वधाई गावो री ।

थे वचपण री भायेली मेरी
सै मनै विदा कर ज्यावो री ।
गळवैंयाँ डाळ गले मे मरै
हिवडै स्यूँ लग ज्याओ री ।

कोई भूल चूक होगी होवै
तो मनै माफ कर देयो री ।
देवळ मासरियै चली गई
मेरी माँ नै कह देयो री ।

सावण रै झूलां री रूत मे
थे याद मन्नै करती रहियो।
सासरिये मे जावो सखियो
थे भूल मतां मन्नै जइयो ।

फिर बुळ देवी नै करी याद
हे मात भवानी मां दुर्गे
दे सक्ति तेरी बेटी नै
हे मात चंडिके मां सर्वे ।

मह बूंद पडी तालाब मांय
चहुं दिसा मे जै-जै कार हुई ।
यूं वी भारत मां री बेटी-
री महिमा अपरम-पार होई।



जोहड़ रो विसवासघात

देवळ दे-रो बलिदान देख
गुस्सं में भर ऊठ्यो हमीर।
अर अन्न भण्डारी जोहड़ स्यूं
जाकर भी बतळायो हमीर।

ओ जोहड! भण्डारं में कितणों
अन्न-धन रयो है बाकी।
दे सही खबर मत देर करै
जल्दी स्यूं तूं मन्नं आकी।

कम बुद्धि जोहड मन रै मांय्
सोची जे द्यूंगो सही खबर
तो यो रण बन्द नही होणो
अर राजपूत यूं ही लड़-लड।

सै खेत होवगा रण मांही
फिर भी जीत्यो नही जागो रण
अर यूं ही सगळा राजपूत
मरता जावंगा ब-कारण।

जे मै बुद्धी स्यूं काम लेवूं
अर कह द्यूं कि भण्डारं मे।
अन्न रो दाणों भी नही बच्यो
है बाकी अब भण्डारं मे।

तो सायद ओ राजा हमीर
खिलजी स्यूं सधी कर लेवै ।
रण बन्द हो ज्यावै अर खिलजी
दिल्ली नै पाछो चलं देवै ।

तो यो विनास बद हो ज्यावै
या सोच आपरै मन मांही।
राजा हमीर नै कहण लग्यो
अन्नदाता ! भण्डारै मांही ।

अब खत्तम होग हारी है अन
सुण वीर अधीर होयो भारी।
अपणै भाई वीरम सागै
जुड़वाई राजसभा सारी ।

दरवाजो देवो खोल किलै गो
यूं आदेस कर्‌यो जारी ।
अर धर्म जुद्ध रै खातर
सगळी कर ली जावै तैयारी।

सब नगर वासियां नै कहद्‌यो
किल्लै स्यूं बारै चल्या जाय
अर भट् मोहमदस्या नै मेरै
महलां मे भिजवा दियो जाय।

ताऊ कम बुद्धि हारो चौखो
चेनणियो मरवा देवै ।
सांची है मूर्ख भायलै स्यूं
स्याणो दुस्मण चोखो रवै ।

☐

मोहम्मदस्या रो त्याग

सदेसो मिलतां ही मोहम्मदस्या
झट हमीर कनै आयो।
तो पास बिठा वींने हमीर
धीरै स्यूं सावळ समझायो ।

सुण मोहम्मदस्या ! कारण तन्नै
यूं आज अठै बुलवाणै रो ।
अब टेम आगयो है म्हारो
आखरी रण करण जाणै रो।

केसरिया बानां पैर जुद्द मे
धामां धूम मचाणं रो ।
मोको श्राग्यो श्रब राजपूत-
नं रण-कौसळ दिखलाणं रो ।

मोको श्राग्यो है सरणागत-
नं देकी प्राण बचाणं रो ।
मोको श्राग्यो है मेरो श्रब
यो सांचो वचण निभाणं रो ।

लेकर की ज्यांन हथेळी पर
दुस्मण स्यूं जा टकराणं रो ।
मोको श्राग्यो है म्हारो श्रब
वचणां तांणी मर ज्याणं रो ।

मोको श्राग्यो है जा रण में
बेर्‌यां रो खूंन बहाणं रो ।
मोको श्राग्यो है मात-भोम-
रै तांणी सीस चढाणं रो ।

तो मेरो हिवडो सोच-सोच
कांपै है तेरो के होसी ।
जे खिलजी तन्नं पकड लियो
मेरै वचणां रो के होसी ।

तेरै कुटब री रच्छ्या को
में बचण दियो है मोहमदरया ।
तो वो पूरो होणो ही चाये
या ही है मेरी मनस्या ।

ईं तांणी तन्नें बुलायो है
कि सारी वार्तां समझा की
तन्नें अजमेर मेरें रिस्तै-
दारां रैं वन्नें भिजवा की

तेरैं कानी स्यूं बे-चिंत्या
सुण मैं होज्याणो चार्‌यो हूं
इ खातर तन्नें अठै स्यूं मैं
जल्दी भिजवाणो चार्‌यो हूं।

वैं मेरा जाती-भाई है
वैं तन्नें बचावण रैं तांणी।
मरज्यागा लडता लडता तेरो
ज्यांन बचावण रैं तांणी।

वांरैं होतां तेरैं ऊपर
कोई भी आंच नही आवैं।
की रैं दो सिर है तेरो
कोई बाळ भी बांको करज्यावैं

विश्वास करो हे मोहम्मद स्या!
वैं तेरी रच्छ्या खिलजी स्यूं
करणें रैं तांणी मेरी ज्यूं
टकरा-ज्यावैंगा खिलजी स्यूं।

ईं लिये मान मेरो कैणो
जल्दी स्यूं महलां मे जावो।
अजमेर जांण री त्यारी कर
अपणें टावरियां सग आवो।

टावरा सग खुफिया रस्त
स्यूं बिठा पालकी मे तन्नै ।
पूंचा देसी मेरा ज्वांन
सुरच्छित है विस्वास मन्न ।

तन्नै अजमेर भिजायां पाछ
कोई चित्या नही मन्नै ।
जल्दी करिये मोहम्मदस्या ! टैम
घणों कम है मेरै कन्नै ।

जो माशा, यूं कह मोहम्मदस्या
झट अपणै महलां मे आयो ।
आकी अपणी बीबी अर भाई
केहब्रू सग बतळायो ।

मोहम्मदस्या री छोटी भाई हो
ज्वांन सजीलो केहब्रू ।
हो बीस बरस रो पठ्ठो यो
मोट्यार रगीलो केहब्रू ।

खाविंद री बातां सुण बीबी
सोचण लागी मोहम्मदस्या की ।
सायद पठांण री लेण परिच्छया
री है मरजी अल्लाह् की ।

है कर्ज चुकाणे रो मौको
तो कर्ज चुकाणो ही चाये ।
जे मरणो पडै फर्ज तांणी
तो हंस की मर ज्याणो चाये ।

हम्मीर महाकाव्य

अर कर्ज चुकावण रै ताणी
अैयां को मौको कद आसी ।
जें ईं मौके पर चूकी तो
मौको हाथ स्यूं निकळ ज्यासी ।

यूं सोच भाग घर में अपणीं
तलवार उठाकी सूत्येड़ा ।
सैं टावरियां नैं कतल कर्‌या
अर आ ड्योढी रै बारै वा ।

लेकी कटार अेक छिण मांही
मार'ली आपरी छाती में ।
अर वहता खूं में कलम डुबो
समचार लिख्या कुछ पाती में ।

सुण ओ हम्मीर ! बस अेक बार
बस अेक बार ईं जीवन मे ।
मैं तन्नै देखणों चावूं हूं
मरणै स्यूं पैल्यां जीवन मे ।

८०

आखर तूं कुणसी माटी रो
है क्यो देखणो चावूं हूं ।
सरणागत-रक्षक मैं तेरो
बस दरसण करणो चावूं हूं ।

हे देव तुल्य हम्मीर राव !
बस मेरी या अभिलासा है ।
मरणै स्यूं पैल्यां अेक बार
तेरै दरसण री आसा है ।

फिर दी पाती मोहम्मदस्या न
मोहम्मदस्या पाती ले भाग्यो।
पाती नैं पढना ही हम्मीर री
आंख्यां मे पाणी आग्यो।

सैं काम छोड सवस्यूं पैल्यां
आ मोहम्मदस्या रैं महलां मे।
देखी हो तवती आंख बाट
वो मोहम्मदस्या रैं महलां मे।

हम्मीर दिखाई देतां ही
बां आंख्यां मे त्रिपती छागी।
अर हरसाकी अेक छिणभर में
बैं सुन्दर आंख्यां पथरागी।

हम्मीर गिर पड्यो गस खाकी
बी देवी रो बलिदान देख।
मुरछ्या जागी तो रोवण लाग्यो
म्रित बगम नैं देख-देख।

फिर खूं स्यूं लथ पथ टावरियां
री वैंती मुण्ड्यां देखी वो।
तो हियो फट पड्यो देख त्याग
बी मुसलमान री बटी रो।

पत्थर दिल मोम होगयो अर
टप-टप-टपकण लाग्या आंसूं।
करडी छाती करली फिर भी
आख्यां रा नही रुक्या आंसूं।

हो गयो खड़्यो अर मोहम्मदस्या नें
भुजा पकड़ की लियों खीच ।
अर छाती स्यूं चिपका बीवें
दोन्यूं हाथां स्यूं लियो भीच ।

हो गयो धन्य हे मोहम्मदस्या !
मैं देख त्याग तेरो भैया ।
दुनियां राखेगी याद सदां
रिस्तो तेरो-मेरो भैया ।

न्योछ्यावर कर दियो खानदान
तूं राखण तांणी आण मेरी ।
तेरो रिण नहीं चुका पाऊं
मैं दे कर के भी ज्यांन मेरी ।

तूं मुसलमान होकी भी सुण
अपणी सी प्रीत निभाई है ।
पिछलै जन्मां रो तूं सायद
मेरो मां-जायो भाई है ।

मेरा तो मनै दगो देग्या
तूं अब भी प्रीत निभार्यो है ।
या सोच-सोच की मोहम्मदस्या
मनड़ो मेरो दुःख पार्यो है ।

मोहम्मदस्या बोल्यो महाराज !
यो समों नही दुख करणे रो ।
मत भूलो टेम आ गयो है
रण मे जा मारण-मरणें रो ।

जावो थे अपणे महलां मे
आगं री करल्यो तैयारी।
मैं भी बेगम ने दफनावण
री करकौ सारी तैयारी।

काल आप रै सागै ही
आखरी-रण करण रै ताईं।
चालूंगो बाना केसरिया मै
राजपूत री हो नांई।



जौहर

हम्मीर घठै स्यूं चल्यो श्रौर
महलां में श्राकी राण्यां नें ।
जौहर री त्यारी कर लेणै-
रो हुकम दे दियो राण्यां नें ।

जद महलां में पूंच्यो हमीर
तो रात बीतगी ही श्राधी ।
होर्‌यो हो भोत दुःखी मन में
बो देख किल्लै री बरबादी ।

दूसरै रोज तड़काऊ ही
सारी राण्यां उठ्ठी सो की ।
पटराणी रंगा-देवी संग
सै चाल पड़ी त्यारी हो की ।

गूंथेड़ा केस खोल कर की
सै पदम सरोवर में न्हाई ।
करकी सोळा सिणगार सज्ज-
धज की सारी पाछी श्राई ।

राजा नैं करकी नमस्कार
सै सीस नवा हो गई खड़ी ।
नभ-मण्डळ में स्यूं बां ऊपर
उगतै सूरज री किरण पड़ी ।

तो लाल-लाल किरण्यां स्यूं
राण्यां रा चैरा दमकण लाग्या ।
भू-मण्डळ मांही चमचमाट
करता गैणां चमकण लाग्या ।

अपणी सारी राण्यां नैं पतिव्रत-
धरम निभावण रै तांई ।
तैयार खड़ी देखी तो सुख
पायो हमीर मन रै मांही ।

झट चोटी अपणी काट और
हर राणी रै कन्नै जाकी ।
चोटी रा बाळ बांटणै लाग्यो
सब नैं मन मे हरसा की ।

चोटी रा बाळ लगा छाती-
स्यूं सै राण्या हँसती-हँसती ।
झट कूद पड़ी जळती ज्वाला मे
छिण भर मे हँसती-हँसती ।

घी अगर चन्दण री ज्वाला मे
सारी की सारी समा गई ।
देखतां-देखतां यूं देखो
ज्वाला मे ज्वाला समा गई ।

हम्मीर देई श्रद्धान्जळी सै नै
दान दक्षिणा दी भारी ।
फिर उठ्यो और चल पड़्यो
करण नै थो आगै री तैयारी ।

जाजा री स्वामी भक्ति

हम्मीर राव री सेनां मे
जाजा नामक हो अेक वीर।
हो भोत पियारो राजा नै
बो स्वामि-भक्त रणधीर, वीर।

बी नै हम्मीर कैवण लाग्यो
सुण ओ जाजादे! तूं भी अब
जा सकै है जे जाणो चावै
तो छोड किल्लै नै तूं भी अब।

तूं घणीं चाकरी करी मेरी
मैं खुस हूँ भोत तेरै स्यूं जा।
या सुण की चल दीन्यो जाजो
कैकी अच्छ्या हे महाराजा।

सीधो अपणै महलां मे जा
आठयूं पत्न्यां नै बुलवाई।
अपणै अेक बेटै रै सागै
बी री आठयूं पत्न्यां आई।

तो झट तलवार उठा जाजो
नोवीं री गरदण पर मारी ।
नोवूं सिर धड स्यूं अलग होया
तो अट्टहास करवी भारी ।

लेको अेक थाळ बडो सारो
नोवूं सिर बी मे सजा लिया ।
चल पड्यो वीर घर स्यूं अपणे
मानव मुण्ड्यां रो थाळ लियां ।

ज्याणूं तो नृत करतो भैरू
चल पड्यो होवे ले मुण्डमाळ ।
बैयां ही चाल हम्मीर चरण
मे जावी बो रख दियो थाळ ।

अर चरण पकड की राजा रा
बो हो अधीर रोवण लाग्यो ।
तो उठा लगा की छाती स्यूं
बो ने हम्मीर कवण लाग्यो ।

यो के कर बैठ्यो रे जाजा!
या के तेरे मन मे आई ?
क्यो खेली या खूनी होळी
मेरे या समझ नही आई ?

जाजो बोल्यो हे महाराज !
जैयां रावण दस सीस काट-
की चढा दिया संकर चरणां मे
बैयां ही मैं सीस काट

की मैं भी थारै चरणां मे
पूरा दस सीस चढावूंगो।
नौ तो हाजिर है अर दसवो
मैं अपणो सीस कटाऊंगो।

मेरा तो थे ही सब्र हो
हे महाराज! स्वीकार करो।
ईं सेवक री या तुच्छ भेंट
लेणं स्यूं मत इनकार करो।

कैकी अपणी तलवार खींच
झट गरदण पर मारण लाग्यो।
तो पकड हाथ रोक्यो हमीर
धीरज स्यूं समझावण लाग्यो।

है धन्य-धन्य तूं रै जाजा।
है धन्य वीर तेरी सक्ति।
है धन्य-धन्य बलिदान तेरो
है धन्य वीर तेरी भक्ति।

रुकज्या ओ जाजा देव! तेरी
ज्यां इतणी सस्ती कोनी है।
तेरै स्यूं बढकी ईं गढ मे
कोई भी हस्ती कोनी है।

जे तूं मरज्यावेगो जाजा!
तो गढ की रच्छ्या कुण करसी?
मैं सोच राखी है जो मन मे
वां इच्छ्या पूरी कुण करसी?

तो झट तलवार उठा जाजो
नोवाँ री गरदण पर भारी ।
नोवूं सिर धड स्यूं अलग होया
तो अट्टहास करवी भारी ।

लेकी अक थाळ बडो सारो
नोवूं सिर बी मे सजा लिया ।
चल पड्यो वीर घर स्यूं अपणे
मानव मुण्ड्यां रो थाळ लियाँ ।

ज्याणूं तो नृत करतो भैरूँ
चल पड्यो होवे ले मुण्डमाळ ।
बैयाँ ही चाल हम्मीर चरण
में जाकी बो रख दियो थाळ ।

अर चरण पकड की राजा रा
बो हो अधीर रोवण लाग्यो ।
तो उठा लगा की छाती स्यूं
बी ने हम्मीर कवण लाग्यो ।

यो के कर बैठ्यो रे जाजा!
या के तेरै मन मे आई ?
क्यो खेली या खूनी होळी
मेरै या समझ नही आई ?

जाजो बोल्यो हे महाराज !
जेयाँ रावण दस सीस काट-
की चढा दिया सकर चरणाँ मे
बैयाँ ही मैं सीस काट

की मैं भी थारैं चरणां मे
पूरा दस सीस चढावूंगो।
नो तो हाजिर है अर दसवों
मैं अपणो सीस कटाऊंगो।

मेरा तो थे ही सब'र हो
हे महाराज ! स्वीकार करो।
ईं सेवक री या तुच्छ भेंट
लेणं स्यूं मत इनकार करो।

कैवी अपणी तलवार खींच
मन गरदण पर मारण लाग्यो।
तो पकड हाथ रोक्यो हमीर
धीरज स्यूं समभावण लाग्यो।

है धन्य-धन्य तूं रे जाजा !
है धन्य वीर तेरी सक्ति।
है धन्य-धन्य वलिदान तेरो
है धन्य वीर तेरी भक्ति।

रवज्या मो जाजा देव ! तेरी
ज्यां इनणीं सस्ती कोनी है।
तेरं स्यूं बढकी ईं गढ मे
कोई भी हस्ती कोनी है।

ज तूं मरज्यावैगो जाजा !
तो गढ की रच्छया कुण करसो ?
मैं सोच राखी है जो मन मे
वा इच्छया पूरी कुण करसो ?

तूं है रणधीर ठिकाणे रो
विसवास-पात्र है लायक है।
है असल सेरणी रो जायो
ईं रै मां नही कोई सक है।

जे मरणो ही है तन्नै तो
गढ री रच्छ्या रै ताणी मर।
सुण करज चुका की माटी रो
तूं मात-भोम रै ताणी मर।

मैं दैर्‌यो हूं जो हुक्म तनै
बो तनै मानणो ही पड़सी।
तनै अब ईं गढ़ रै सासन-
री डोर थामणी ही पड़सी।

कह चीर्‌यो अंगूठो अपणो
अर तिलक लगा की जाजै रै।
हम्मीर राज गढ रणत-भँवर
रो कर्‌यो हवालै जाजै रै।



हम्मीर रो सुरलोक-वास

जाजे नें देकी राजपाट
अर काम-काज सो सलटाकी।
दुस्मण रै पल्लै क्यूं नां पड़ै
या सोच खजानै मे जाकी।

जोहड़ नें दे आदेस खजानो
सारो पदम-सरोवर मे।
फिकवा दीन्यो छिण मे हम्मीर
जाकर बी पदम-सरोवर में।

फिर घाण चुवयां ही पडी नजर
बी री अन्न रै भण्डारै मे।
तो देख्यो अन्न हो भर्‌यो घणो-
ही, बो अन्न रै भण्डारै मे।

तो चाल दुस्ट जोहड़ री यूं
हम्मीर रै समझ में आगी।
झट बीरमदे नें कर्‌यो इसारो
एकदम गुस्से में आकी।

तो समझ इसारो बीरमदे
तलवार चला की पळ भर मे।
कर दीन्यो सीस अलग धड़ स्यूं
बी दुस्ट जोहड़ रो छिण भर मे।

खिलजी रै पल्लै नां पड़ज्या
या सोच हाथियां रा मस्तक।
बो काट-काट क्री गिरा दिया
फिर होकी अेकदम स्यूं निस्चित।

सै केसरिया बानां पैर्या
अंतिम-रण करणं रैं ताणी।
सज-धज की चाल्या बीर सभी
रण-भूमि मे लडणं ताणी।

झट तिलक लगायो राजगुरू
कुळ री केसरिया पगडी पर।
पढकी मंतर बांधी राखी
कुळ री केसरिया पगडी पर।

अपणी तलवार दुधारी अर
हाथां मे धनुस बाण ले की।
चाल्या सै बीर अेक सागै
जय हर हर महादेव कै की।

गंगाधर टाक, बिरमदे अर
परमार छेत्रसिंघ रै सागै।
मोहम्मदस्या, केहरू राजद अर
अेक सिंघ जोद्धा सागै।

गुणतीस जून सन तेरा सो
रविवार रात्री रै मांही।
हम्मीर चल पड्यो खिलजी स्यूं
आखरी-रण करण रै तांई।

जद आठ्यूं वीर लडाकू जोधा
चाल्या तो धरती हाली।
जय मात-भोम, जय रणत-भवर
रा गूंजण स्यूं धरती हाली।

जद पतो बादस्या नें चाल्यो
रण करणें आग्यो है हमीर।
बानां केसरिया में सज
मारण मरणें आग्यो है हमीर।

तो बो भी त्यारी कर अपणी
डटग्यो रण-भूमि रै मांही।
भर मार काट होवण लागी
भारी रण-भूमि रै मांही।

जद ज्यांन हथेळी पर लेकी
रण करणें लाग्या राजपूत।
दुस्मण सेनां रा प्राण काळ
बण हरणें लाग्या राजपूत।

तो गाजर, मूली ज्यूं विसमां
रा धड स्यूं सीस कटण लाग्या।
डर स्यूं मार्‌या म्हांही सैनिक
पीछे रण मांय हटण लाग्या।

तलवारां पर तलवार चली
घमसाण मचण लागी रण में।
सर-सराट करतै तीरां री
बोछाड होवण लागी रण में।

तो रुण्ड-मुण्ड स्यूं भरी धरा पर
नदी खून री बहण लागी।
देखतां-देखतां साही सेनां
मांय प्रळय सी ढहण लगी।

कितणां ही सैनिक तो आपणी
आपस री भगघड़ मे गुडग्या।
कितणां रा प्राण पखेरू रण मे
डर कै मारे ही उडग्या।

ज्याणूं कितणां री छात्यां पर
भगतै हाथ्यांरा पग पडग्या।
कितणां ही घोडा रै खुर कै
नीचै दबग्या, चिथग्या, मरग्या।

यूं मार-काट होई भारी
खिलजी री साही सेनां में।
मुठ्ठी भर वीर हिला की रख
दीन्ही ही सारी सेनां नैं।

नां जीतण री ही खुसी ग्रौर
नां दुख हो ग्रांनैं हारण रो।
बस जोस उफणर्यो हो ग्रांरै
मन-मांय सत्रु नैं मारण रो।

कितणां ही घाव लग्या तन पर
श्रौरं तलवारां तीरां रा ।
पण डिगा होसलो सक्या नही
श्रां राजपूत रणधीरां रा ।

लडना-लडता घायल होग्या
पण फिर भी लडता गया वीर ।
साही सेनां नै काट-काट
यूं श्रागै बढता गया वीर ।

पण फिर भी टिड्डी दळपी
साही सेनां स्यूं कद तक लडता ?
घायल हो हो की गिरण लग्या
रण भूमि मे लडता लडता ।

पण साही सेनां नै फिर भी
लडता लडता सघार गया ।
कितणां ही खिलजी रै जोधा नै
मरता मरता मार गया ।

विरमदे, केहत्र, गगाधर
टाक, सिंग, परमार सभी ।
बलिदान होगया मात भोम पर
वीर गति पा गया सभी ।

पर मोहम्मदस्या साही सेनां
मे जा चौ-तरफां स्यूं घिरग्यो ।
छाती मे लाग्यो श्रक तीर
मुरछित हो धरणी पर गिरग्यो ।

तो मुरछित होयेडै नै हीं
खिलजी जा वी नै पकड लियो।
अपणे डेरै मे भिजवा वी नै
जंजीरा स्यूं जकड लियो।

रण-भूमि मे मोहम्मदस्या नै
जद यूं गिरतो देख्यो हमीर।
तो भारी गुस्सै मे भर की
दुस्मण सेनां नै चीर-चीर।

रण-भूमि मे ताण्डव करतो
आगै नै बढतो गयो वीर।
खिलजी रै नई सुभट जोद्धा-
नै मार गिराया चला तीर।

अर यूं लडतो-लडतो हमीर
जद पूंच्यो खिलजी रै सामी।
तो तीर चढा धनुवां ऊपर
झट खीच्यो खिलजी रै सामी।

पण चाण-चुके ही चौतरफां
स्यूं एकदम चाल्या कई तीर।
अर आ हमीर री छाती मे
लग गया अचानक कई तीर।

तो सध्यो निसानो चूक गयो
हम्मीर चला नही सक्यो तीर।
अर घायल होकी रण-भूमि मे
झटकै स्यूं पड गयो वीर।

आखरी टेम आगयो सोच
माँ धरती नैं परणाम कर्यो ।
मन ही मन रणथम्भोर किल्लै नैं
अन्तिम बार प्रणाम कर्यो ।

दुस्मण जिन्दो नीं लेय पकड़
या सोच आपरी छाती मे ।
कम्मर मे बन्धी कटार काढ
ली मार आपरी छाती मे ।

मर यूं मौत नैं गलै लगा
यो वीर धरा स्यूं विदा होयो ।
हो गयो अमर हिन्दवाणो सूरज
जा सुरगाँ मैं वास कर्यो ।

हम्मीर राव रै मरताँ ही झट
खिलजी बन्द कर दियो जुद्ध ।
पर मोहम्मदस्या पर नजर पड़ी
तो अेकदम स्यूं होगयो क्रुद्ध ।

बोल्यो रे मोहम्मदस्या ! तन्नै
जे मरहम पट्टी करवा दी ।
स्यूं बचा तो के तूं मिल-
ज्यावगो मेरी सेना मैं बाकी ।

मोहम्मदस्या बोल्यो सुण [illegible] !
जे मैं जिन्दो रह पातो तो ।
तो स्यूं [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] मौको पातो तो ।

सुण वी उत्तर खिलजी वीं नैं
झट हाथी रैं पग कैं नीचैं ।
दबवा कौ मार दियो छिण मे
ही नही दया मन मे वी कैं।

यूं म्रत होयो मोहम्मदस्या को
फिर रतीपाल ग्रौर रणमल नैं।
दोयां स्यूं बांध उडा दीन्या
दान्यां नैं ही खिलजी पल मे।

यूं ग्रन्त होयो वां दोन्यां रो
फिर खिलजी दो दिन जाजा स्यूं।
लडतो रयो गढ रणत-भँवर
जीतण रैं ताणी जाजा स्यूं ।

दो दिन तक डट्यो रयो जाजो
ग्राखिर खिलजी स्यूं हार गयो।
ग्रर मात-भोम री रक्षा करतो-
करतो सुरग सिधार गयो।

यूं सन् तेरा सो ग्रक जुलाई
बारह नैं इं गढ पर स्यूं ।
चौहांण वंस रो राज खत्म
होग्यो हो रणत-भँवर पर स्यूं।



उपसंहार

वीर-सिरोमणी, भक्त-सिरोमणी
राजा तो होया अनेक ।
पण प्रण-सिरोमणी तो
होयो है दुनियां में हम्मीर अेक ।

अपणी सांणी अर न्यायणियां
तो राजा होया है अनेक ।
जो मर्यो दूसरां रै तांणी
वो तो हो बस हम्मीर अेक ।

आजादी तांणी ज्यान देवणियां
तो देख्या राजा अनेक ।
पण सरणागत रै लिये मरणियो
तो देख्यो हम्मीर अेक ।

हम्मीर जियां रो वीर धरा पर
होवैगो नां होयो है ।
राजावां मे सिर मोर मुकट
हम्मीर-राव ही होयो है

हो राजपूत बात रो धणी
हठ को पक्को, स्वाभिमानी।
हो कर्म-योगि नर, महानिडर,
कर्मठ, कठोर मन रो स्वामी।

बी धरती री माटी चदण है
जी पर जनम्यो तूं हमीर।
बी मायडली री कोख धन्य है
जायो बटो सूर-वीर।

है त्याग धन्य मोहम्मदस्या को
जाजा को, धारा-देवी को।
पति-प्रेम धन्य है राण्यां रो
महाराणी रगा-देवी रो।

बलिदान धन्य है देवळदे
हम्मीर हठी री बेटी रो।
अर मोहम्मदस्या री घरहारी
बी मुसलमान की बटी रो।

धिक्कार है रणमल, रतीपाल
बां आस्तीन रै सांपां नै
वैरी स्यूं जाकी मिलग्या
घर को भद दे दियो बापां नै।

घर का भदी लका ढा दी
नही तो ईं रणत भँवर गढ नैं।
कुण जीत सकै हो रण कर की
हम्मीर हठी स्यूं ईं गढ़ नै।

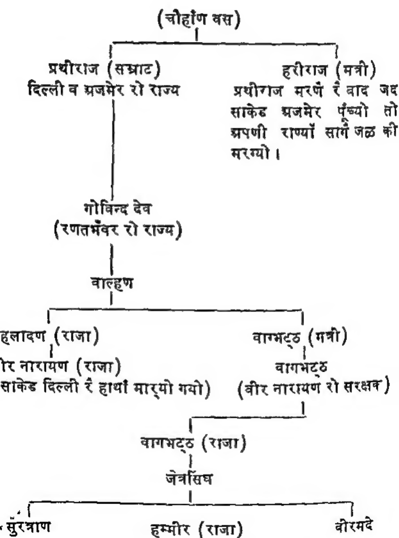
हम्मीर महाकाव्य

अब भी सिर ऊँचो लियां खड़्यो
है, आस लगायां रणत-भँवर।
जन्मैं गो फिर स्यूं भारत में
कोई हम्मीर हठी सो नर।

वीं दिन ये घाट्यां गूंजैगी
बी दिन या माटी गावैगी।
चमकैगो सूरज हिन्दवाणो
या सुबह कदे तो आवैगी।



हम्मीर री बंसावळी


(चौहाण वंस)
प्रथीराज (सम्राट)
दिल्ली व अजमेर रो राज्य
हरीराज (मन्त्री)
प्रथीराज मरणं रै बाद जद
साकेड अजमेर पूंच्यो तो
अपणी राण्यां साथे जळ की
मरग्यो।
गोविन्द देव
(रणतभंवर रो राज्य)
वाल्हण
हलादण (राजा)
ीर नारायण (राजा)
साकेड दिल्ली रै हाथां मार्‌यो गयो)
वागभट्‌ठ (मन्त्री)
वागभट्‌ठ
(वीर नारायण रो सरक्षक)
वागभट्‌ठ (राजा)
जेत्रसिंघ
सुरत्राण
हम्मीर (राजा)
वीरमदे